जावा

जावा

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

अक्टूबर १९४०]

देश-दर्शन

[आश्विन १९९७

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या ४

जावा

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

जावा द्वीप

एशिया के पूर्वी द्वीप समूहों में जावा सब से अधिक प्रसिद्ध है। यह मलय आर्चीपेलागो का एक छोटा द्वीप है। बोर्नियो सुमात्रा और सेलेबीस के द्वीप इससे कहीं अधिक बड़े हैं। जावा द्वीप हालैंड के साम्राज्य में है। इसका क्षेत्रफल हालैंड का चौगुना है। यह द्वीप बड़ा धनी है। यहां की जन संख्या तेज़ी के साथ बढ़ रही है और इस समय ३ करोड़ से अधिक है। जावा की जन-संख्या तीन भागों में बांटी जा सकती है। मध्य में जावा के मूल निवासी, पश्चिमी भाग में सूण्डानी और पूर्वी भाग में मदूरा के निवासी रहते हैं। इन लोगों के बीच में जो योरुपीय लोग बसे हैं। उनमें डच लोगों की संख्या अधिक है। प्राचीन निवासियों में चीनी लोग अपने उन्नतिशील कार्यों के कारण सब से अधिक प्रसिद्ध हैं।

जावा निवासी क़द के छोटे होते हैं। वे बड़े सख्त और भव्य होते हैं। उनका रँग गेहुँवाँ होता है। वे अपनी सूरत से ही कुलीन तथा बुद्धिमान प्रकट होते हैं। उनका चमड़ा बड़ा मुलायम होता है। वे एक चौड़ी

लुँगी (सारोंग) अपने कमर में बाँधे रहते हैं। सार्वजनिक स्थानों में स्त्रियां छोटी अथवा अधिक लम्बी अस्तीन वाली जाकेट पहनती हैं। वे एक बड़े रूमाल का भी प्रयोग करती हैं। रूमाल का प्रयोग कई कार्यों में किया जाता हैं। मामूली ढँग पर वे लोग अपने सिर खुला रखते हैं परन्तु अपने देश की लाज रखने के लिये वे अपने सिर के बालों को ढकने के लिये रूमाल बांधते हैं। रूमाल कई स्थानों पर प्रान्तीय रीति के अनुसार मोड़दार बांधा जाता है। वे लोग अपनी कमर में लुंगी (सारोंग) के सहारे पीछे की ओर किरिस (एक प्रकार की बड़ी छुरी) लगाये रहते हैं और अपनी श्रेणी के अनुसार शृंगार करते हैं परन्तु गरमी के दिनों में हल्के कपड़े पहिने जाते हैं और बहुधा लोग नंगे रहते हैं। ६ अथवा ७ साल की लड़कियां अपनी माताओं के साथ बाज़ार जाते समय हाथों में केवल कंगन अथवा चूड़ा और गले में हार पहिनती हैं। यही उनकी पोशाक होती है। इसी अवस्था के बालक लोग झींगुर का शिकार करते हैं और उन्हें पकड़ कर लड़ना सिखाते हैं। यह एक सुन्दर हास्यप्रद खेल होता है।

उनके बच्चों का जीवन बड़ा सुखमय होता है। संतान हो जाने पर जावा निवासी अपने पुराने नाम को त्याग देते हैं और अपने को सिदिन अथवा सिना आदि नामों से पुकारते हैं। यह नाम उनके परिवार अथवा मित्रों द्वारा प्रयोग किया जाता है। छोटे बच्चों को वे 'पा मां, केचिल और गेपोक' आदि नामों से पुकारते हैं।

जावा के निवासी अधिकतर मुसलमान हैं। पश्चिमी भाग के बड्डई लोग अपने प्राचीन ऐतिहासिक धार्मिक रिवाज़ों का पालन करते हैं और पूर्वी भाग में हिन्दू धर्म का प्रचार है। कट्टर मुसलमान लोग भी कुरान के नियमों के साथ साथ प्राचीन देवताओं और प्राकृतिक शक्तियों की उपासना करते हैं। उनका अनुमान है कि बाढ़ तथा भूचाल से बचने, सूर्य और चन्द्रमा को चलायमान रखने, वर्षा करने और समुद्र अथवा पर्वतों को उनके स्थान पर स्थिर रखने के लिये आवश्यक है कि प्राकृतिक शक्तियों की उपासना की जाय। प्राकृतिक शक्तियों को हिन्दू देवी देवताओं के नाम से पुकारा जाता है। शेर को भक्षण करने वाला व्यक्ति आदर की दृष्टि से देखा जाता है क्योंकि उनका विश्वास है कि किसी के दादा की आत्मा ने उसे जाकर प्रवेश किया

था। इसी प्रकार कुछ चिड़ियों को भी आदर से देखा जाता है। वहां के लगभग सभी जानवर तथा कीड़े मकोड़े मनुष्य की योजना में सहायक होते हैं और उनके द्वारा बहुत सी बातें जानी जा सकती हैं। वहां के पुष्प तथा फल आने वाले समय और भविष्य में होने वाली बातों की सूचना देते हैं। यदि कोई पत्थर से ठोकर खा जाता है तो उसका भी सगुन असगुन माना जाता है। स्वप्न के सम्बन्ध में वहां के निवासियों का ख्याल है कि वे परियों के देश में रहने वाले देवी देवताओं के कारण होते हैं। यह देवी देवता उनके अनुमान के अनुसार एक अद्भुत बन और ज्वालामुखी पर्वतों में रहते हैं। इतना होने पर भी जावा के मुसलमान अपने कट्टरपन पर बड़ा घमंड करते हैं और जो लोग हाज़ी (मक्का मदीना की यात्रा) होकर लौटते हैं उनका बड़ा स्वागत होता है। हाज़ी लोग पवित्र माने जाते हैं इस पवित्रता के पर्दे में बहुत से लोग महाजन बन जाते हैं और लोगों को ऋण देकर उनका खून चूसते हैं। इतना होने पर भी जब कोई नया हाज़ी लौटता है तो उच्च से उच्च और नीच से नीच घराने के लोग उसका

दर्शन करने जाते हैं और उसके चोंगे के किनारे को छूकर पवित्र होने की रसम मनाते हैं।

जावा के कुलीन परिवारों के लोग वहां की सरकार के उच्च पदों पर नियुक्त किये जाते हैं। कुलीन परिवार वालों को वहां के निवासी सरदारी कर देते हैं। जावा में डच शासन का नियम यह है कि हालैण्ड के कर्मचारी जावा के डच निवासियों के सरदारी को अधिकार में रखते हैं और वे सरदार वहां के निवासियों पर अधिकार रखते हैं। अब इस नियम का पालन दिन प्रति दिन कम होता जा रहा है।

इस प्रकार के सरकारी सम्बन्ध में रेज़ीडेन्ट अथवा प्रान्तीय गवर्नर तो बड़े भाई की भाँति और रीजेन्ट (प्रथम श्रेणी के जावा निवासी सरदार) लोग छोटे भाई की भांति हैं। रीजेन्ट का चुनाव देश के सबसे उच्च घरानों में से होता है और वह लोग अपने छोटे सरदारों के द्वारा काम करते हैं। उन्हें अपने निवास स्थान पर सामने डच झंडा फहराने का अधिकार है। रीजेन्ट के सिर पर पेयूग एक प्रकार का छाता लगाने और सिरीह डब्बे (पान दान) के ले जाने का भी उन्हें अधिकार है

रीजेन्ट लोग अपने पीकदान, बैठने की चटाई और रुमाल आदि सामान अपने साथ रख सकते हैं। यह सारे सामान उनके पद के लिये आवश्यक हैं। रीजेन्ट के छाते की छड़ी कलई की हुई होती है। उनसे छोटे सरदार काली अथवा सफेद छड़ी का छाता रखते हैं। पेयूग के ढक्कन पर सुन्दर चमकीले वृत्त बनाये जाते हैं जो सरदार के पद की व्याख्या करते हैं। सुनहला साँग अथवा सोने के पेयूग के प्रयोग करने का अधिकार बहुत कम होता है क्योंकि यह बात बड़े आदर की मानी जाती है।

जावा के निवासियों के अन्दर प्राकृतिक रूप से ही संस्कारिक बातें पाई जातो हैं। उनके जीवन के सारे कार्यों पर उनके रिवाजों और आदतों का प्रभाव पड़ता है। इससे इस बात का पता चलता है कि कितना बड़ा प्रभाव वहां के प्राचीन निवासियों पर भारत के हिन्दुओं का पड़ा था। सदियों पहिले भारतीय लोग वहां अपना धर्म प्रचार करने गये थे। वहां के लोगों के रीति-रिवाज और स्वभाव के लिये एक शब्द आदत का प्रयोग किया जा सकता है। वे लोग अपने नाखून को काटकर
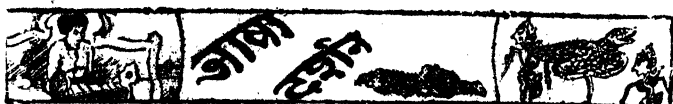
उसे गाड़ देते हैं क्योंकि यह उनका स्वभाव है। उनके बीच किसी प्रकार का सुधार नहीं हो सकता। उनके कार्य चाहे जितने बुरे तथा बेढंगे हों परन्तु यदि उन्हें समझाया जाता है और दूसरा मार्ग बताया जाता है तो वह कहते हैं। कि यह सदैव से होता आया है और हमारी यह आदत है।

जावा निवासी आवश्यकता समझते हुये भी परिवर्तन नहीं करते। वे अपने स्वभाव के कारण मजबूर हैं। यदि वहाँ के किसी नौकर से वर्षा होते समय प्रश्न किया जाय कि वर्षा हो रही है अथवा धूप है तो वह शीघ्र ही उत्तर देगा कि मैंने नहीं देखा है। यद्यपि वह भली भाँति बात को जानता है तो भी स्वभावतः वह उसे स्पष्ट नहीं करता। जावानिवासी अपने नौकरों की ऐसी उलटी सीधी बातों का अर्थ शीघ्र ही समझ जाते हैं।

जावा निवासी यद्यपि बड़े शान्त होते हैं (उनकी अपेक्षा मदूरा निवासी बड़े चञ्चल तथा बातूनी होते हैं) तो भी जावा निवासी अपना निरादर नहीं सहन कर सकते हैं।

यदि उनके साथ अत्याचार अथवा अन्याय किया जाता है तो उसकी आग उनके हृदय में सुलगती रहती

है और थोड़ा सा मौका पाकर भी बदले की आग भड़क उठती है। वे अपने बराबर वालों की मार अथवा अनादर को सहन कर लेते हैं परन्तु किसी भी योरुपियन का साहस नहीं होता कि वह किसी छोटे से छोटे व्यक्ति को सजा दे सके। क्योंकि उसे भय रहता है कि कहीं वह अपने किरिस पर हाथ न फेर दे अथवा उस निरादर का बदला किसी समय मौका पाकर निकाल न ले।

जब कोई जावा निवासी अपने निरादर का बदला अपने बैरी से लेने के लिये झुकता है तो वह पागल तथा जङ्गली हो जाता है और जो कोई भी उसके बैरी को बचाने के मार्ग में आता है उसका भी खून कर देता है अथवा घायल कर डालता है। उसको पकड़ना बड़ा कठिन हो जाता है। जब वह अपने शत्रु को खदेड़ता है तो पकड़ने वाले हथियार लेकर उसे पकड़ने के लिये दौड़ता है। उस समय एक चौकी से दूसरी चौकी को शीघ्र ही इसकी सूचना दे दी जाती है और मुश्किल से जीवित पकड़ा जाता है।

समृद्ध जावा

जावा संसार के प्रमुख उपजाऊ देशों में से है। यहाँ के निवासी पैदायशी किसान होते हैं। यहाँ थोड़ा परिश्रम करने पर भी बहुत उपज होती है, परन्तु यहां काल बहुत पड़ता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वहां के निवासियों से हालैण्ड की सरकार बेगार कराकर उपज कराती है वह उपज सरकारी गोदामों में दाख़िल की जाती है और फिर वहाँ से योरुप के बाज़ारों के लिये हालैंड भेज दी जाती है। इस प्रकार हालैंड की सरकार को बहुत बड़ा लाभ होता है। यह नियम काउन्ट वान डेन वोच के कहने पर हालैण्ड की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये जारी किया गया था। अब यह नियम कम कर दिया गया है। बेगार की प्रथा अब भी प्रचलित है और सड़कों आदि की मरम्मत के लिये बेगार ली जाती है। अब भी वहां के निवासियों से कठिन परिश्रम लिया जाता है और उन्हें मज़दूरी बहुत कम दी जाती है जिससे वे केवल जीवित ही रह सकते हैं। क़हवा की उपज सरकार के लिये बेगार करके की जाती थी। अब भी यदि क़हवा का नाम लिया

जाता है तो वहाँ के निवासी घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। क्योंकि उनको उसके नाम से वहीं प्राचीन सख्ती की याद आ जाती है।

जावा के निवासियों का मुख्य भोजन चावल है। यह उनकी मुख्य उपज भी है परन्तु सरकारी नियमों के कारण वहां इतनी उपज चावल की नहीं की जा सकती कि जावा निवासी उससे अपना भरण-पोषण कर सकें। जावा निवासी अच्छा चावल काफ़ी मात्रा में निर्यात करते हैं और उसके स्थान पर खराब चावल आयात करते हैं। जावा के निवासी जहां सिंचाई हो सकती है और जहां नहीं हो सकती दोनों प्रकार की भूमि में चावल की खेती करते हैं। खेती करने में वे अपनी चतुरता का अद्भुत परिचय देते हैं। क़हवा, चाय, कोको, रबर, ईख, तम्बाकू, इन्डीगो, सिनकोना, मिर्च आदि की उपज कम्पनियों के हाथ में है और उसमें योरुपीय धन लगा हुआ है।

जावा के फल अपने मोटे छिलकों से भली भांति पहचाने जा सकते हैं। अनन्नास, आम, केला, साओ-मैनलिया, नारियल, जम्बूबीजी (बैर) नारंगी आदि वहाँ के प्रधान फल हैं। केला को वह लोग पिसाँग
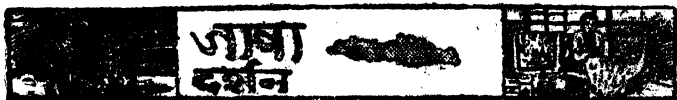
कहते हैं। वहां पर यह लगभग सौ प्रकार का होता है। इसकी लम्बाई अँगुल की लम्बाई से लेकर हाथ भर तक होती है बड़े केले हाथ की मोटाई के बराबर मोटे भी होते हैं। वह घोड़ों को खाने के लिये दिये जाते हैं। केला को वहाँ के निवासी बड़ा लाभ दायक समझते हैं इसी कारण वह बच्चों को सबसे पहले भोजन के लिये दिया जाता है। डयूरियन का फल भी वहाँ बहुत पसंद किया जाता है। इसे प्रेमी लोग अपने प्रेमिका को देते हैं जिससे प्रेम का स्थिर होना माना जाता है। जावा के फल बड़े सख्त होते हैं। वहाँ के यात्रियों को चाहिये कि वे वहाँ फलों को खाते समय ध्यान रक्खें कि वह फलों को न खाकर उसका रस चूसने का प्रयत्न करें। यात्रियों को चाहिये कि फल का प्रयोग करते समय उस प्राचीन कहावत का ध्यान रक्खें जिसमें कहा गया है कि फल प्रातःकाल सोना, दोपहर को चाँदी और संध्या के समय सीसा के समान होता है। अर्थात् सबेरे फल अधिक लाभ दायक दोपहर को उससे कम और संध्या समय दोपहर से भी कम लाभ दायक होता है। इस लिये जावा में यात्रियों को संध्या समय, फल-प्रयोग निषेध रखना चाहिये।

जावा में सैकड़ों अद्भुत प्रकार के फूल होते हैं। वहाँ के फूलों के लिये बसंत काल की आवश्यकता नहीं है। वे पतझड़ को अपनी पत्तियां झाड़ने अथवा बसंत को फूलने के लिये प्रतीक्षा नहीं करते हैं। वह बारा-मासी होते हैं और सदैव फूला करते हैं। वहां की वाटिकाएँ सदैव हरी भरी दिखाई पड़ती हैं। यह बड़े अभाग्य की बात है कि वहाँ के निवासी अथवा योरुपीय लोग वाटिकाओं में फूल की उपज नहीं करते। योरुपीय लोग टबों अथवा गमलों में फूल लगाते हैं जिससे जाते समय वह अपने दूसरे घरेलू सामान के साथ ही साथ उसे भी दूसरे लोगों के हाथों बेंच सकें। सुगंधमेलाटी अथवा माल्ती के फूल से वहां की स्त्रियां अपने बालों को सजाती हैं और काचूबूँग के फूल का बीज कारियो कहलाता है यह दवा के काम में आता है और चोट पर अच्छे मरहम का काम करता है। नोकदार पत्ती वाले और जिन पौदों की पत्ती तथा डाली में अन्तर नहीं होता ऐसे वृक्षों की अधिकता है। जावा निवासियों के पुष्प वाटिकाओं के लगाने का चाव नहीं है। वे स्वयं उत्पन्न हुये फूलों से ही अपना काम निकाल लेते हैं।

जावा दर्शन

जावा में गाड़ियों में छोटे छोटे घोड़े जोते जाते हैं। वहाँ कुत्तों की भी बड़ी अधिकता है। प्रत्येक गली में कुत्ते सैकड़ों की मात्रा में दिखाई पड़ते हैं। रात को मसों को बड़ी अधिकता रहती है। कोई भी जावा यात्री वहाँ के मसों को नहीं भूल सकता। मनुष्य के जीवन के यह बड़े भारी बैरी होते हैं। मसों द्वारा मलेरिया के कीड़े चारों ओर फैल जाते हैं जिससे मलेरिया बुखार का प्रकोप रहता है। इससे मनुष्य का दिमाग़ शान्तिमय नहीं रह सकता। जहां कहीं भी मनुष्य बैठता है यह चुपके से उसका खून चूसने के हेतु पहुंच जाते हैं। इन भयानक चीज़ों के भाग्यवश बैरी भी होते हैं। चिचाक नामक एक छोटा सा रेंगने वाला जानवर होता है वह इन मच्छरों को बहुत खाता है। वह बहुधा कमरों की छतों में वास करता है। जहां कहीं वह मसों को देखता है शीघ्र ही वहाँ पहुँचने का प्रयत्न करता है। बिस्तुइया इनकी दूसरी बैरिन होती है। इसको वहां इसके शब्द के कारण 'गेको' कहते हैं। बिस्तुइया का घर में होना शुभ माना जाता है वह जितना ही अधिक शब्द करती है उतना ही अधिक शुभ माना जाता है। सांप, घड़ियाल और शेर भी वहां बहुत हैं और इनसे भी मनुष्य जाति

को बड़ी हानि पहुंचती रहती है। जावा में कीड़े मकोड़े भी अधिक संख्या में भांति भांति के पाये जाते हैं। जहां कहीं भी कोई सूराख अथवा मांद हो जाती है तो यह अधिक मात्रा में बाहर निकल पड़ते हैं। जावा में दीमक भी बहुत पाये जाते हैं। दीमक अपनी कुटिलता के कारण बड़े बदनाम हैं।

दीमकों से आल्मारियों, कपड़ा टाँगने की खूँटियों और सामान रखने वाले कपड़ों की रक्षा की जाती है। तो भी यदि सदैव ध्यान न दिया गया और सफाई न की गई तो किसी न किसी प्रकार दीमक लग ही जाती है। कई बार इन दीमकों ने नोटों की ढ़ेर और बुलियन को चाट डाला है जिसकी हानि के जिम्मेदारी वहां के स्थानीय अफसरों को उठानी पड़ी है। जावा के बन जंगली जानवरों से भरे हैं। वहां के निवासी जङ्गली जानवरों का शिकार करते हैं। जावा में हाथी नहीं होते हैं, परन्तु वहां गैंडा समूह के समूह घूमते हुये दिखाई पड़ते हैं। यदि उनमें से कोई किसी प्रकार अपने समूह से अलग हो गया तो वह हाथी की भांति बड़ा भयानक हो जाता है। जङ्गली पशु भो कम भयानक
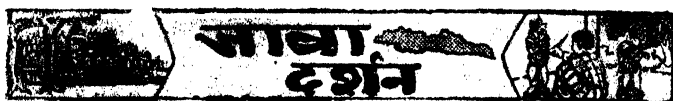
होते हैं। हिरण और जङ्गली सुअरों का शिकार बन्दूक द्वारा किया जाता है। चिड़ियों का शिकार भी लोग किया करते हैं। जङ्गली सुअर बड़ा भयानक होता है। वह घायल होने पर मनुष्य के ऊपर बुरी तरह से आक्रमण करता है और यदि सावधानी न की जाय तो वह जिस पर आक्रमण करता है उसको बुरी तरह या तो घायल कर डालता है या जान से मार डालता है। जावा के जंगलों के तेंदुआ बड़ा भयानक होता है वह डाक ले जाने वाले घोड़ों तथा मोटरों पर आक्रमण करता है। घोड़ों को वह मार कर खा जाता है। वह इन पर मार्ग में आक्रमण करता है इसी कारण बहुधा डाक रुक जाती है और काफी देर हो जाती है। यदि भूख-प्यास के कारण वे जङ्गल से देहात के गांवों में पहुँच जाते हैं तो फिर उससे बड़ा भय निवासियों के ऊपर छा जाता है। जावा निवासी शेर से बहुत डरते हैं। वे उसका आदर भी करते हैं। उसके छुटकारे के लिये उनके लिये केवल यह मार्ग होता है कि वे जाल लगाकर अथवा गढ़ा खोद कर उसे फँसाते हैं। यदि वह किसी के लड़के स्त्री अथवा लड़की को हड़प कर जाता है तो वह उसे अपना निजी मामला समझता है। और उसकी मांद

खोज कर उससे अकेले किरसे और बल्लम लेकर लड़ने के लिये जाता है और बहुधा मार भी डालता है। शेर को मारने के पश्चात् शिकारी शेर के बालों और मूँछों की बड़ी रक्षा करता है। क्योंकि जावा निवासी शेर के बाल को चिकित्सा कार्य में प्रयोग करते हैं। शेर के पंजों को जावा निवासी पहिनते हैं उनका विश्वास है कि उसके पहिनने वालों को किसी प्रकार के चोट नहीं पहुँच सकती है। जावा के नदियों के घड़ियाल भी बड़े भयानक होते हैं। घड़ियाल बहुत बड़े होते हैं। जावा निवासी नदियों के किनारे घूमने और नहाने धोने के बड़े शौकीन होते हैं उसी समय घड़ियालों को मौका मिल जाता है और वह उन्हें नदी में खींच ले जाते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि एक घड़ियाल एक स्त्री को नदी में ले गया। वह स्त्री आठ बच्चों की मां थी। घड़ियाल स्त्री को समूचा निगल गया था। दो दिन पश्चात् जब वह मारा गया तो उसके अन्दर उस स्त्री का सिर और शरीर का कुछ भाग तथा एक दूसरे आदमी के हाथ पैर घोड़े की दो बड़ी हड्डियां तथा २० छोटे जानवरों की हड्डियां और २० पत्थर के टुकड़े मुर्गी के अंडे के बराबर वाले निकले।

जावा का सब से बड़ा नगर बटेविया

यव या जव (जौ) का आकार होने से इस द्वीप को यवद्वीप या जावा कहते हैं। प्राचीन काल के जहाज चलाने वाले मल्लाहों का कहना था कि वे जावा पहुँचने के पहले ही जावा की गंध सूंघ कर समझ जाते थे कि जावा द्वीप के समीप वे पहुँच गये हैं। जब वे तट के समीप पहुँचते थे तो उन्हें पुष्पों की सुगंधमयी वायु को बयार लगती थी। जावा के तटों के समीप अगणित छोटे छोटे द्वीप हैं जो बनों से घिरे हैं। टैनजंग प्रियोक बटाविया का एक बन्दर है। यह स्थान अत्यन्त सुन्दर है। बन्दरगाह पर एक स्टेशन है। वहां से यात्री लोग रेल द्वारा नगर के ऊपरी भाग को जाते हैं जहां पर अच्छे होटल हैं। नगर का निचला भाग (पुराना बटेविया) एक व्यापारिक स्थान है। इस भाग में व्यापार के सिवा और कुछ भी नहीं है। यह नगर "पूर्व की रानी" के नाम से प्रसिद्ध है। जिन व्यापारियों के वहाँ पर दफ्तर थे वे लोग संध्या समय अपने स्थानों को पूर्ण संतुष्टता के साथ वापस चले जाते थे। वहाँ के मकान बड़े, सुन्दर और हवादार हैं। मकान वाटि-

काओं के भीतर बने हैं। लम्बी चौड़ी सड़कों पर बड़े बड़े चौरास्ते बने हुये हैं। सब से बड़ा खुला मैदान किंग्स प्लेन (राजा का मैदान) है। इस मैदान के चारों ओर बड़े बड़े व्यापारियों और अफसरों के विशाल भवन बने हुये हैं। इसके पूर्व में रेलवे स्टेशन, पश्चिम में म्यूजियम, दक्षिण में रेज़ीडेन्सी और उत्तर में गवर्नर जनरल के रहने का स्थान है। वाटरलू स्क्वाएर पर फौजी अफसरों के रहने के क्वार्टर हैं। उसके एक ओर सरकारी काम के लिये एक विशाल भवन है। इसके बगल में हाई कोर्ट और कॅक्कोर्डिया का सैनिक क्लब है। बीच में भवन का एक भाग कुछ अधिक ऊँचा है जिसके ऊपर एक छोटे कुत्ते की मूर्ति है। जान पीटर्ज़ गोयन डच ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्रथम गवर्नर जनरल था। वह बटेविया का जन्म दाता है। सरकारी दफ्तर के सामने घास के मैदान में उसकी मूर्ति बनी हुई है।

प्राचीन नगर के देखने वालों को चाहिये कि वे सवेरे उठकर प्राचीन बटेविया की छटा का अवलोकन करें। प्राचीन नगर, नये नगर से कहीं अधिक सुन्दर हैं। प्रातःकाल का भ्रमण पैदल अथवा किसी गाड़ी

द्वारा मोलेनवलीट (मिल रेस) अथवा गनूँग सहारी नहर होकर जकट्रा सड़क पर किया जा सकता है। चाहे हम जिस ओर जावें और चाहे जिस समय जावें हमें जावा निवासी नदी में अधिक से अधिक मात्रा में आनन्दपूर्वक स्नान करते हुये दिखाई पड़ेंगे। प्रातःकाल और संध्या समय लोग अधिक नहाते हैं। गनूँग सहारी नहर से यदि हम मोलेनवलीट होकर लौटें तो हमें नारियल के बाग़ीचे बहुत से मिलेंगे। इन बाग़ीचों के स्थानों पर पहले वहाँ के नागरिकों के गृह भवन थे। अब केवल इने गिने घर और चीनी गुम्बद हैं। जगट्रा सड़क पर पिटर एर्बरफील्ट का स्मारक बना हुआ है। लगभग २०० साल हुये जावा निवासियों ने अपने यहाँ के समस्त ईसाइयों को मार डालने का षड्यंत्र रचा था। पिटर एर्बरफील्ट उनका प्रधान नेता था। एक डच लड़की ने इस षड्यंत्र का भेद एक डच अफसर को बतला दिया। वह लड़की इस डच अफसर से प्रेम करती थी। डच अफसर ने डच सरकार को इसकी सूचना दे दी और पीटर गिरफ्तार किया गया और उसे प्राण-दण्ड दिया गया। उस पीटर के शरीर को ६ भागों में चीर डाला गया। उसका दाहिना हाथ और

सिर काट दिया गया था, शेष शरीर के चार बराबर भाग किये गये थे और उसे षड्यंत्र वाले स्थानों पर घुमा कर प्रदर्शन कराया गया था। उसका घर गिरा दिया गया था केवल एक दीवार खड़ी रक्खी गई थी जिस पर उसका सिर टाँग दिया गया था। उसके सिर की हड्डी अब भी वहाँ पर लटकी हुई है। उसके नीचे यह शब्द लिखे हैं। "यह पिटर गद्दार की यादगार है, जिसने अपने देश को धोका दिया था और उसे प्राण-दण्ड मिला था। इस स्थान पर किसी को खेती करने, बाग़ लगाने अथवा घर बना कर रहने की आज्ञा नहीं है, बटेविया १४ अप्रैल सन् १७२२ ई०"। दूसरे षड्यंत्र कारियों के माँस नोचकर, हाथ-पैर काट कर उन्हें नगर के बाहर कष्ट पूर्वक मरने के लिये फेंक दिया गया था। उसके पश्चात् दूसरे रविवार को ईश्वर को धन्य-वाद देने के लिये जो सिटी-चर्च में सर्विस हुई थी उसकी भी स्मृति अब तक वहाँ मौजूद है।

पेनाँग द्वार से कुछ क़दमों की दूरी पर बड़ी तोप लगी है जिसका आदर वहाँ की स्त्रियाँ बहुत करती हैं। मछली बाज़ार के समीप लुवार-बटांग में हदरामाउट नामक

मुसलमान साधु की स्मृति है। डच ईस्ट इंडिया कम्पनी के प्राचीन क़िले का कोई भाग भी पृथ्वी के ऊपर नहीं रह गया है। नगर का टाऊन हाल १७१० ई० का बना हुआ अब तक उसी दशा में बना हुआ है। टाऊन हाल के समीप ही काली बेसार है। इसका पानी मटमैला है। इसके घाट ही व्यापार के प्रधान केन्द्र हैं। बटाविया के राज्य-भवन में अब गोदाम है और व्यापारिक कार्य होते हैं। राज्य-भवन के विशाल हाल (बड़े कमरे) जहाँ पर कम्पनी के प्रसिद्ध सेनापति तथा कैप्टन आदि रह कर युद्ध तथा शासन करते थे वहाँ पर अब क्रय और बिक्री का काम होता है। टिगेर नहर किसी समय में सुन्दर विशाल भवनों से सुसज्जित था और वहाँ पर गवर्नर जनरल रहा करते थे परन्तु अब वह स्थान बिलकुल उजड़ गया है। चीनी कैम्पों को जो सड़कें जाती हैं वह सदैव चालू रहती हैं। बटेविया में ३० हज़ार मंगोलियन हैं। यह लोग दूकानदारी, कारीगरी और चिड़ियों आदि के शिकार करने आदि का व्यवसाय करते हैं। यह लोग ईमानदारी की रोटी कमा कर नहीं खाते हैं। यहाँ पर एक दवाख़ाना है जहाँ से पाउडर की एक दवा मिलती है। वह इसलिये प्रसिद्ध है कि

बाल की सारी बीमारियों को अच्छा करती है वह दवा किन किन औषधियों से मिल कर बनाई जाती है इसको ईश्वर ही जाने ।

चीनी लोग अपने भोजन में सुअर का मांस का बहुत प्रयोग करते हैं परन्तु मुसलमान लोग (खास कर हाजी) उससे घृणा करते हैं । यहाँ के चीनी मंदिर देखने योग्य हैं। उनकी सजावट तथा मूर्तियां देखने योग्य होती हैं । परन्तु वहाँ के पुजारी स्वयं मूर्तियों का आदर नहीं करते और उनकी रक्षा ठीक तौर पर नहीं करते । एक बार क्वान टी (व्यापार का देवता) के मन्दिर में उस मन्दिर के पुजारी का नौकर लड़का प्रधान मूर्ति के नीचे बर्तन साफ करता हुआ दिखाई पड़ा। चीनी लोगों के मकानों की छतों पर बहुधा पुष्पों के गमले तथा तकियाएँ दिखाई पड़ती हैं जिनसे घर के भीतर की अद्भुत कहानी का रहस्य मालूम होता है। परिवार के मरने पर तकिया एक खास ढंग से रक्खी जाती है। खाली पुष्प गमलों की संख्या से पता चलता है कि घर में कितनी अविवाहित लड़कियां हैं। इसी प्रकार सड़क अथवा गली की ओर मकान के अन्दर जितने

सूराख होंगे उनसे पता चलेगा कि घर में कितने अविवाहित पुरुष हैं। चीनी लोग जो अविवाहित हैं वे धनी लोगों की छतों की ओर देखते चला करते हैं कि उनके छत पर कितने गमले खाली रक्खे हैं।

जब धूप तेज़ हो जाती है और गर्मी अधिक हो जाती है तो ठंडी वेल्टेव्र रेडेन सड़क पर चलना अच्छा लगता है। इस सड़क पर दोनों ओर वृक्ष लगे हैं। इसी सड़क पर परपाटन में अँग्रेज़ी चर्च है। स्त्रियां अपना बाज़ारू सौदा करने के लिये नूर्डविज्क और रिज्स-विज्क स्थान पर एकत्रित होती हैं। पुरुष लोग हारमोनी क्लब में अपने मित्रों से मिल सकते हैं। वहीं पुरुष लोग एकत्रित होते हैं।

भोजन में चावल, दाल, मछली, चिड़ियों के बच्चे, झिंगरी तथा मसाला का अधिक प्रयोग किया जाता है। चाय पानी करने तथा घंटे दो घंटे आराम करने के पश्चात् चीनी महल्ले में पसार बहारू बाज़ार का भ्रमण किया जा सकता है। इस बाजार में हर प्रकार के सामानों की दुकानें हैं। यदि यहां पर किसी प्रकार की वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती तो वह वस्तु चीनी व्या-पारी से प्राप्त की जा सकती है।

नूर्ड विज्क में बहुत से रिस्टोरेन्ट तथा भोजनालय हैं। संध्या समय वहां पर बड़ी रोशनी तथा चमक दमक रहती है और प्रत्येक स्थान पर लोग चाय-पानी तथा भोजन करते हुये दिखाई पड़ते हैं। संध्या के समय वहां का दृश्य देख कर ऐसा लगता है कि बटेविया में सदैव भोजन आदि का उत्सव हुआ करता है। वहां पर लम्बी कतार में गाड़ी, मोटर तथा दूसरी सवारियां खड़ी दिखाई पड़ती हैं जिनके सवार लोग भोजन करते रहते हैं। यहाँ पर एक फ्रांसीसी नाचघर है जहां पर लोग नाच-गान का मज़ा उठाते हैं। कंकोर्डिया में एक सैनिक क्लब (मण्डल अथवा संस्था) है जहाँ पर प्रत्येक शनिवार की रात को गाना बजाना होता है वहाँ भी शनिवार की रात को बड़ा जमघट होता है। जावा के निवासी बड़े मूल्यवान वस्त्र तथा हैटों (टोपियों) का प्रयोग करते हैं।

जावा निवासी भी नाच गाने के बड़े प्रेमी होते हैं और वह एक बड़ी संख्या में गवर्नर जनरल के महल में एकत्रित होते हैं। नाच-गानों और तमाशों के लिये जावा लोग नानटोनिंग शब्द का प्रयोग करते हैं।

ग्राम्य जीवन

जावा निवासियों के जीवन का ज्ञान करने के लिये यात्रियों को देहात तथा गांवों का भ्रमण करना पड़ता है। गांवों का भ्रमण करने से ही उनके ग्राम्य जीवन, रीति-रिवाज, सुन्दरता और अच्छाइयों का अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। बटेविया से चलने पर प्रथम स्टेशन बोगोर (जिसे बूयटेन ज़ोर्ग कहते हैं) है। बूयटेन ज़ोर्ग का अर्थ "दुख के बाहर" का होता है। सचमुच ही बटेविया के नागरिक संकटों से यहां आकर शान्ति मिलती है। यहां पर गवर्नर जनरल रहा करते हैं। गरमी के दिनों में वह चिपानरू स्थान में भीञ्जेर पर्वत पर चले जाते हैं। वेल्टेवरेडेन में वह केवल राज्य कार्य के लिये कभी कभी जाते हैं। डिपोक स्थान में जावा के देशी ईसाइयों की बस्ती है। बटेविया से रेलगाड़ी चलने पर बूयटेन ज़ोर्ग लगभग संध्या समय पहुँचती है। संध्या समय वहाँ लगभग रोज़ वर्षा होती है। यहाँ की जलवायु समुद्र तट से बहुत अच्छी है। यहाँ की ऊँचाई ८६० फुट से कुछ ऊँची है।

बूयटेन ज़ोर्ग में सुन्दर होटल हैं। यदि यात्री अपने

रहने का प्रबन्ध निजी तौर पर न कर सके तो उनके लिये सरकारी घरों में स्थान दे दिया जाता है। प्राचीन काल में जावा के धनी निवासी आगन्तुक की बड़ी खातिरदारी करते थे। उनके चढ़ने के लिये सवारी और नौकर चाकर, खाने पीने आदि का सभी परिश्रम करते थे। जाते समय उन्हें कुछ रुपया विदाई भी दिया करते थे परन्तु अब यह रिवाज बन्द हो गया है। बन्दरगाह से दूर भीतर वाले स्थानों में अब भी अतिथि सत्कार बहुत होता है।

बूयटेन ज़ोर्ग का प्रसिद्ध होटल बेल्लेवे का है। इस होटल के पीछे वाले कमरों से जावा का नीला पर्वत साफ दिखाई पड़ता है। इस पर बादल एकत्रित रहते हैं जिनका दृश्य बड़ा ही मनोहर होता है। सालक पर्वत भी इसी के समीप है। यह पहले एक ज्वालामुखी पर्वत था परन्तु अब इसकी ज्वाला शान्त हो गई है। जावा के ज्वालामुखी पर्वत एकाएक भभक उठते हैं और उनके भीतर से आग और लावा बह निकलती है जिससे पहाड़ के ढालों के निवासियों के घर तथा खेतों का सत्यानाश हो जाता है।

नदियों में नहाने का रिवाज जावा में बहुत है। लड़के, लड़कियां, स्त्री तथा पुरुष सभी नदियों में नहाने के लिये जाते हैं। चिट्टानी नदी का सुन्दर तट सदैव गुञ्जान रहता है। वहां पर नहाने वाले आते जाते रहते हैं। बच्चे बतखों की भांति प्रातःकाल से संध्या तक पानी में पड़े रहते हैं। लड़के तथा लड़कियां तीव्र धारा में खेल खेलते रहते हैं। सुका डिनजिन और तिरतसारी अथवा कोटा बाटू को लाग सैर करने के लिये जाते हैं। वहां पर लोग बैठ कर लेख लिखा करते हैं। वह स्थान बड़ा सुन्दर है। वहां पर वृक्षों तथा लताओं के कुञ्ज हैं। नदी पत्थरों की बड़ी चट्टानों में होकर हरहराती तीव्र धार से घुमड़ती हुई बहती रहती है।

वहां पर एक बोटैनिक गार्डन (वाटिका) है। इस वाटिका को १८१७ ई० में प्रोफेसर रीनवर्ड ने स्थापना की थी। कई एक रसायन तयार करने वाले स्थान बना दिये गये हैं। वाटिका के अन्दर एक म्यूज़ियम (अजायबघर), एक जड़ी बूटियों से औषधि तयार करने का कारखाना और एक पुस्तकालय है। गेडेन पर्वत के उत्तरी पूर्वी ढाल पर चिबोडस नामक वाटिका है जिसमें वृक्षों तथा उन पौधों का अध्ययन किया

जाता है जो केवल पर्वतों पर उगते हैं। बूयटेन ज़ोर्ग के बाहर की ओर चिकेयूम्यूह में एक बाग है जहाँ जड़ी बूटियां लगाई जाती हैं। यह दूसरे देशों को भेजी जाती हैं। बोटैनिक बाटिका का मार्ग एक प्राचीन द्वार होकर है। यह द्वार चीनी कैम्प से अधिक दूर नहीं है। केनारी के वृक्ष मार्ग के दोनों ओर लगे हैं जो बड़े सुन्दर हैं।

बाटिका के अन्दर कई प्रकार के नारियल के वृक्ष लगाये गये हैं। भाँति-भांति के लाल, नीले, पीले और श्वेत रंग के पुष्प भी बहुत बड़ी संख्या में लगे हुये हैं। चिलीओंग द्वारा जो द्वीप बनता है उसमें कनारी के वृक्षों की एक दूसरी नई कतार लगाई गई है वह टेसमान की सुन्दरता से कम नहीं है।

विलक्षण तथा अद्भुत वृक्षों में से एक ट्रावलर्स ट्री (यात्रियों का वृक्ष) अपनी पत्तियों के मध्य में पानी रखता है जिससे प्यासे यात्री अपनी प्यास बुझा सकें। यहां पर एक दूसरे प्रकार का वृक्ष है जो कीड़े मकोड़ों और मक्खियों को अपनी ओर मिठास से फुसला कर खींच लेता है। जब वे ठीक तौर पर किसी के ऊपर बैठ

जाती हैं तो वह अपने बन्द होने वाले द्वारों (दरारों) को बन्द कर लेता है और मौज से उन्हें खाता है। जिनमें कोडिया वृक्ष के मुलायम तने पर असंख्य चींटियां रहा करती हैं। चींटियां प्रकृति द्वारा दिये हुये ऐसे स्थान को बहुत पसंद करती हैं। इसी से उस वृक्ष को बहुत से लोग चींटियों का घोंसला भी कहते हैं। यूपास का बृक्ष जावा में बहुत खराब माना जाता है। उसके जूस (रस) से वहाँ के निवासी एक प्रकार का भयानक विष तयार करते हैं। कहा जाता है कि इस बृक्ष के नीचे सोने वाले यात्री सदैव की गहरी निद्रा में सो जाते हैं और कभी भी सोकर नहीं उठते। बाटिका में एक प्रकार का बृक्ष और है जो बकरी का भोजन करता है। यदि बकरी उसके समीप जाती है तो वह उसका खून चूस जाता है। इसी प्रकार वहां पर एक पौदा सांप के रूप का होता है। वह पौदा अपने रूप के कारण ही दूसरे पौदों के बीच बच कर रहता है।

गवरनर जनरल का महल उसके बाटिका के भीतर कमल-ताल के उत्तर की ओर है। वहां पर पब्लिक का कोई व्यक्ति नहीं जा सकता है। एक बार की कहानी है कि किसी गवर्नर जनरल की यह प्रकृति थी कि वह

बड़े प्रातःकाल टहलने के लिये जाता था। एक दिन जब वह सैर करने के पश्चात् अपनी सीधी सादी पोशाक में लौट कर द्वार पर आयो तो उसे संतरो ने भीतर घुसने से रोक दिया। बतलाने पर भी उसने भीतर प्रवेश नहीं करने दिया, आखिर गार्ड के आने पर वह भीतर जा सका।

बोटैनिक बाटिका में डी एरेन्स गवर्नर जनरल, उसके रिश्तेदारों और दूसरे गवर्नर जनरलों की क़ब्रें बनी हैं। वहां पर कुछ और वान हसेल्ट नामक प्रकृति अध्ययन करने वालों की भी क़ब्रें हैं।
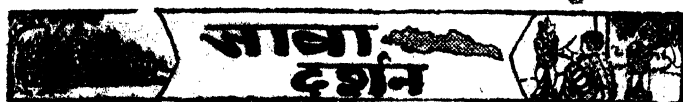
आत्मा अथवा भूतों की वाटिका

इटली के उत्साही लोगों ने प्रींगेर रिजेन्सी को स्वर्ग का एक टुकड़ा कहा है। परन्तु डेराडेल की सड़क का दृश्य इससे अधिक सुन्दर है। पूनचाक पर प्रान्तीय सीमा का अन्त हो जाता है। पूनचाक पैञ्जेरांगों और और मेगेमेनड्ढंग के बीच में एक उच्च स्थान है। पूनचाक से बाईं ओर एक पर्वतीय श्रेणी है जो तेलगा वानी तक जाती है। तेलगा वानी को भाँति भांति के रंगों की झील कहते हैं। इस स्थान का रंग सूर्य की किरणों के साथ ही साथ बदलता रहता है। दोपहर के समय यह तनाह प्रिऐंगन (भूतों की वाटिका) बन जाता है। जावा के ज्वालामुखी पर्वतों की उदासोनता का अपहरण वहाँ की झीलों द्वारा हो जाता है। रात के समय आकाश सुन्दर चन्द्र-प्रकाश और तारागणों से सुशोभित रहता है। तेलगा वानी पर चांदनी रात व्यतीत करना बड़ा ही आनन्ददायक होता है। वहाँ पर रात में गैंडों के सिवा और किसी जङ्गली जानवर का भय नहीं रहता है। यह जानवर तड़के प्रातःकाल पानी पीने आते हैं। मार्ग को छोड़कर दूसरी ओर जाने का मार्ग मिलना

कठिन हो जाता है क्योंकि चारों ओर बन तथा झाड़ झंकाड़ है।

सिन्दन ग्लाया का सैनीटोरियम बहुत सुन्दर स्थान पर है परन्तु इसका सैनिक स्पताल हटा दिया गया है। बीमार सैनिक अब चिमाही भेजे जाते हैं। इसी के समीप गवर्नर जनरल का देहात में ठहरने का चिपानस नामक स्थान है। सिन्दनग्लाया से कई स्थानों की सुन्दर यात्रा की जा सकती है। सिन्दन ग्लाया से गेदेह ज्वालामुखी का मुख देखा जा सकता है। यह स्थान सवेरे दिन निकलने के समय अच्छी तरह देखा जा सकता है नहीं तो फिर इसके ऊपर बादल छा जाते हैं। जावा तथा गर्म देशों के यात्रियों को चाहिये कि वे अपने सैर करने का समय सदैव प्रातःकाल का रक्खें। कानडँग बादल का मार्ग घने बन होकर जाता है। कानडँग बदक के आगे पहाड़ों का ढंग आल्पस पर्वतों की भांति हो जाता है। हरियाली का अंत हो जाता है और मार्ग रेगिस्तान होकर ज्वालामुखी पर्वत के मुख तक जाता है। सुकानूमी (संसार का आनन्द) पहाड़ी के दूसरी ओर है। इस हरियाले मैदान में श्वेत पुष्प खिलते हैं।

बहुत से लोग मुकाबूमी को रेलगाड़ी द्वारा जाते हैं। रेलमार्ग थोड़ी दूर तक ऊँचे-नीचे होकर कहवा तथा चाय के बाटिका के मध्य होकर जाता है। यह बाटिकाएं सलक और गेदेह के ढालों पर हैं। सुकाबूमी की जलवायु बड़ी सुन्दर है। पलाबूहम रातू के चारों ओर समुद्र तट है। यह स्थान बड़ा रमणीय है। बण्डूग स्थान पर सुन्दर हरे भरे खेत हैं। चारों ओर हरी भरी पहाड़ियों पर बन हैं। पहाड़ियों पर बहते हुये पानी का सुन्दर शब्द सदैव सुनाई पड़ता रहता है। चियांजियर पार करने पर राजमंडला का स्टेशन है। यहां से जावा के सब से बड़े प्रपात चुरूक हालीमून का दर्शन होता है। इस प्रपात तक स्थली मार्ग से पहुँचना कठिन है क्योंकि मार्ग जङ्गल होकर जाता है।

राजमंडला स्टेशन से चितारूम और चीहिया होकर मार्ग चीपेटीर गाँव को जाता है। चीहिया से सड़क के वृक्षों का बन है और मार्ग सुन्सान है। ची चबांग में कुछ झोंपड़े बने हैं और पुलीस की चौकी है। इस स्थान पर मकान की दीवारी बांस चीर कर बनाई जाती है। ची चबांग से सैंग हियांग का मार्ग बड़ा भयानक तथा जटिल है। सैंग हियांग पहुँचने पर चितरूम नदी

हर हराती संकरी चट्टानों के बीच होकर बहती है और चुरूक हालीमून को जाती है। यहाँ पर पानी पर्वत की ऊँची चोटी से नीचे आता है। पर्वत बादलों से छिपा रहता है। नीचे गिरने पर पानी एक कुण्ड में लापता हो जाता है। इस कुण्ड की गहराई का पता नहीं है। कुण्ड में पानी गिरने से फेन पैदा होता है जो घूमता रहता है। चुकाँग रांव को बिजली का स्थान कहते हैं। यहां से नदी एक दूसरे द्वार होकर नीचे की चट्टान पर जाती है। यहां पर नदी के गिरने का भीषण शब्द होता है। प्रपात की सुन्दरता बड़ी ही मनोहर है और सूर्य की किरणों में हजारों इन्द्र-धनुष दिखाई पड़ते हैं। यहां के दृश्य को देख कर यात्री मार्ग की कठिनाइयों को भूल जाता है। इस स्थान पर अबाबील के झोपड़े बहुत बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं।

चिमाही स्थान पर सैनिक अड्डा रहता है। यह स्थान जावा की रक्षा के लिये बड़ा ही उपयुक्त है। बण्डुग में सरकारी रेलवे के प्रधान दफ्तर तथा कारखाने हैं। लेमबूंग में सिनकोना की उपज की जाती है। इसी के समीप दो ज्वालामुखी पर्वतों के मुख हैं। गारूट और

चिचालेंग्का को पार करने पर रेलवे यात्रा का सब से सुन्दर स्थान आ जाता है। नागरिक दर्रे में रेल ऊपर को ओर चढ़ती हैं और फिर नीचे की ओर लेलेस के मैदान में आती है। यहां पर रेल नदियों और कंदराओं का चक्कर काटती नीचे उतरती है। लेलेस एक तीर्थ स्थान है। यहाँ पर झील के बीच में छोटे छोटे द्वीपों पर बहुत सी कब्रें हैं जिन पर प्रार्थना करने के लिये प्रतिवर्ष जावा निवासी हज़ारों की संख्या में एकत्रित होते हैं। यह स्थान योगियों के योग साधन के लिये बड़ा सुगम है।

गारूट के समीप ही एक दूसरी बड़ी झील सेतु बगॅन्तित है। उसके पास बहुत धन था। उसने इस स्थान पर एक बड़ा महल बनाने का इरादा किया। जिस दिन महल की नींव पड़ने को थी उस दिन अगणित गाने वाले तथा नाचने वाली लड़कियाँ एकत्रित हुईं। प्राचीन प्रथा के अनुसार नींव में किसी न किसी का बलिदान अवश्य होता था। इसलिये जब चेरीबोन कीन्यीइन्दित राजा को अपनी नाच-कला दिखाने को आगे बढ़ी तो राजा ने अपने सिपाहियों को इशारा किया। इशारा पाते ही सिपाहियों ने उसे उठा कर नींव

के गड्ढे में डाल दिया। उसके ऊपर से एक बड़ा पत्थर भी डाल दिया गया। जैसे ही वह पत्थर उस कोमल बालिका के ऊपर गिरा चीखने की आवाज़ पैदा हुई और वह पत्थर उछल कर राजा के ऊपर गिरा और राजा चकनाचूर हो गया। उसके पश्चात् वहां से पानी की एक तेज धार निकली जिसके चारों ओर मैदान में पानी भर गया और राजा के सभी दरबारी लोग डूब कर मर गये। इस प्रकार उस स्थान पर सेतु बगेन्दित की झील बनी। झील के मल्लाह लोग यात्रियों को वह स्थान लेजाकर दिखाते हैं जहाँ पर उस लड़की का बलिदान हुआ था। बलिदान वाले स्थान पर कमल खिला करते हैं। इस झील में रमज़ान (मुसलमानों का उपवास का महीना) के महीने के पश्चात् बोटों की दौड़ होती है।

जावा के ज्वालामुखी पर्वत

कावा मानूक से लेलगा बोडस तक श्वेत गंध की झील है। पपन दयन ज्वालामुखी पर्वत को जाते समय एक दरार उसकी पर्वतीय दीवारों के बीच में मिलती है। १८२२ ई० में ज्वालामुखी पर्वत एकाएक उबल पड़ा जिसके बिस्फोट के कारण पर्वत उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम की ओर हट गये और दरार बन गई। इस उबाल के कारण ४० गांव नष्ट हो गये और ३ हज़ार जानें गईं। इससे भी बड़ा बिस्फोट १७७२ ई० में हुआ था। चेरी बोन का चिरेमे ज्वालामुखी पर्वत भी भयानक है उससे भी बहुत आग तथा लावा निकला करती है।

जावा में लगभग १०६ ज्वालामुखी पर्वत हैं जिनमें से १३ ऐसे हैं जहाँ सदैव अग्नि ज्वाला तथा धुवाँ निकला करता है। इसका अन्दाज़ लगाया गया है कि क्लूट पर्वत से सन् १६०१ ई० में ७,००,००,००० घन फुट गैस वस्तु बाहर निकली थी। गालूँग गँग पर्वत से १८६४ ई० में लगभग ७७,००,००,००० घन फुट और १८८३ ई० में क्राकाटाव से ६३,५०,००,००० घन फुट ठोस पदार्थ बाहर निकला था। १८८३ ई० में क्राका-

टाव द्वीप में ज्वालामुखी पर्वत का धड़ाका इतना भीषण हुआ कि उससे द्वीप के टुकड़े टुकड़े हो गये और सूँडा की जलसंयोजक नष्ट हो गई। लावा की प्रबलता इतनी भीषण थी कि उसमें ऐनएर और चिरिंगिन के नगर बिलकुल बह गये उनका नाम व निशान भी न रह गया और वहां पर समुद्र हो गया जिससे दूसरी ओर सुमात्रा के पर्वतों तक बड़े बड़े स्टीमर जाने लगे हैं। इस उद्गम तथा स्फोटन में ७० हज़ार जानें गईं। बहुत से लोग तो अशुद्ध हवा के कारण मरे, बहुत से लावा में जल मरे और बहुतेरे उबलती हुई लावा तथा अग्नि की ज्वाला के नीचे दब गये उस समय जावा के लगभग सभी ज्वालामुखी पर्वतों में धड़ाका हुआ था और धड़ाके की आवाज़ लंका मैनलिया और पर्थ (आस्ट्रेलिया) तक तोप की भांति सुनाई पड़ी थी। ४० हज़ार फुट ऊपर तक भाप उड़ी थी। गर्द और राख से बहुत सी भूमि पट गई। सारे संसार में सूर्यास्त के बाद आकाश का रंग लाल हो गया था जो योरुप, अमरीका और अफ्रीका आदि में भी दिखाई पड़ा था। क्राकाटाव के धड़ाके के कारण मोलका द्वीप समूहों में एक विचित्र धक्का पहुँचा

था और आस्ट्रेलिया में भूकम्प आ गया था। इससे पता चलता है कि पानी के नीचे नीचे ग्लोब के सभी स्थानों में सम्बन्ध लगा हुआ है।

मलाया द्वीपसमूह और जावा में बहुधा भूकम्प आया करते हैं। भूकम्प के पश्चात् बड़े ज़ोरों के साथ घड़घड़ाहट की आवाज़ होती है। ऊपर नीचे चारों ओर वस्तुएँ हिलने डुलने लगती हैं। भूचाल थोड़ी थोड़ी देर कर के कई बार आता है। भूकम्प के कारण ज्वालामुखी पर्वतों से लावा बह निकलती है। महामारी की बीमारी पैदा हो जाती है और दुर्भिक्ष तथा दूसरे आकस्मिक दुर्घटनायें होती हैं। इसलिये भूकम्प आने पर शीघ्र घर से बाहर निकल जाना चाहिये और अपने घर के द्वारों को खोल देना चाहिये। कुओं के सूख जाने से पता चल जाता है कि भूकम्प आने वाला है अथवा ज्वालामुखी पर्वत का उद्गार होने वाला है मनुष्य से जानवरों को इन दुर्घटाओं के आने का ज्ञान अधिक जल्दी हो जाता है। कहते हैं कि ऐसे समय पर घोड़े चलते चलते सड़कों पर खड़े हो जाते हैं और बार बार फुफकार छोड़ने लगते हैं। कुत्ते अपने बचाव के लिये चारपाइयों के नीचे स्वरक्षित स्थान ढूँढ़ने लगते हैं। जावा के मध्यवर्ती

भाग में १८६० ई० में बड़ा भारी भूकम्प आया था। जावा निवासियों का कहना है कि उनका द्वीप एक बड़े कछुए की पीठ पर बना है। इसलिये जब कभी भी भूकम्प आता है तो वहाँ के निवासी "हिडूप", "हिडूप" (हम जीवित हैं) करके चिल्लाते हैं। उनके विश्वास के अनुसार जब कछुआ अपना पानी में उतरने का समय जानता है तो वह पानी में उतरने का प्रयत्न करता है। इसी कारण भूकम्प आता है। "हम जीवित हैं" का शब्द सुनकर कछुआ रुक जाता है क्योंकि जब तक जावा में लोग रहते हैं तब तक कछुआ समुद्र में डूब नहीं सकता है।

मेरोपी का ज्वालामुखी पर्वत जावा में सब से बड़ा है। इसकी चोटी ऊँची नीची चट्टान दार है इसका मुख भयानक तथा ढाल उजाड़ हैं जिन पर लावा की काली तह जमी है। इसी के समीप मरे बाबू की सुन्दर बनैली हरी भरी पहाड़ी है। जावा में सबसे विलक्षण ब्रोमो का ज्वालामुखी पर्वत है ब्रोमो का शब्द "ब्रह्मा" से निकला है। यह पर्वत पूर्वी जावा में सब से अधिक पवित्र माना जाता है। दसार अथवा बलुहे समुद्र में

विडोडारेन, सेगोरोवेदी, बटोक और ब्रोमो चार पर्वत हैं। ब्रोमो सब से छोटा है। ब्रोमो को टेनेग्गेर भी कहते हैं। अर्जुनो, स्मेरु और ब्रोमो के पर्वत बारी बारी से लावा तथा आग अपने मुख से बाहर फेंकते हैं। टेनेग्गेर के समीप तो सारी का सैनोटोरियम है। यह समुद्र तल से ५८३० फुट ऊँचा है। यह एक सुन्दर स्थान है। यहाँ के निवासी माजापाहित हिन्दू साम्राज्य के बंशज हैं। इस साम्राज्य के नष्ट होने के पश्चात् ही मुसलमानों का राज्य हुआ और हिन्दू लोग और अधिक पूर्व की ओर चले गये।

तोसारी से पद्कम १½ मील और मूँगल दर्रा ४½ मील है। मूँगल दर्रा से बाईं ओर उतरने पर तेनगेर ज्वालामुखी पर्वत का मुख नीचे की ओर दिखाई पड़ता है। स्मेरु का ज्वालामुखी पर्वत १२ हज़ार फुट ऊँचा है। यह पर्वत जावा के ज्वालामुखी पर्वतों में सबसे अधिक ऊँचा है। इस पर्वत में १८६५ ई० में ज़ोरों का धड़ाका हुआ था और लावा बह निकली थी उसके पश्चात् नवम्बर सन् १६११ ई० में दूसरा धड़ाका हुआ जिससे बड़ी हानि हुई थी। टेनगेर का मुख ऊपर की ओर ६ मील लम्बा और साढ़े पांच मील

चौड़ा है। नीचे इसकी लम्बाई ५½ मील और चौड़ाई ४ मील है। ब्रोमो पर्वत के ऊपर सदैव धुएँ का बादल छाया रहता है। ब्रोमो के दाहिनी ओर सिगोरोवेदी अथवा गिरि और विडोडारेन के ढाल हैं। एडेर ज्वालामुखी पर्वत के मुख की दीवाल का एक भाग है। पास ही लमोनगन और याँग के ज्वालामुखी पर्वत हैं।

ब्रोमो ज्वालामुखी पर्वत से बहुधा हल्का नीले रंग का धुवां निकला करता है। प्राचीन काल में जावा निवासी अपने यहां के ज्वालामुखी पर्वतों को बलिदान करके शान्त करते थे। ब्रोमो पर्वत सबसे अधिक पवित्र माना जाता है इसलिये उसको माननीय बलिदान होता था। यह बलिदान देवताओं के देवता को अब भी प्रत्येक साल दासर के मन्दिर में दिया जाता है। मुसलमानों के धर्म प्रचार के पहले हिन्दू प्रधान पंडित अपने सहायकों के साथ ब्रोमो ज्वालामुखी के मुख तक जाता था और हवन करने के पश्चात् चावल, चिड़ियों के बच्चे, ताँबे और चाँदी के सिक्के ज्वालामुखी के मुख के अन्दर डालता था और ब्रह्मा से रक्षा के लिये प्रार्थना करता था। परन्तु मुसलिम मत के प्रचार होने के कारण यह रिवाज अब बन्द हो रहे हैं।

उपज

जावा की उपज

जावा को पांच बड़े भागों में बांटा जा सकता है—

(१) समस्त उत्तरी तट में (कुछ स्थानों को छोड़ कर) पानी की अधिकता है। इस भाग की भूमि समस्त द्वीप में सबसे अधिक उपजाऊ है और चावल तथा ईख की खेती होती है। इस भाग में जावा के प्रधान बन्दरगाह तथा नगर हैं, यद्यपि कोई भी प्राकृतिक हार्बर नहीं है।

(२) भीतर की ओर पर्वतीय प्रदेश है जिसमें तृतीय श्रेणी की चट्टानें पाई जाती हैं। इस भाग की भूमि कछारी अथवा ज्वालामुखी भूमि से कम उपजाऊ है। इस भाग में जावा के तेल के प्रदेश पाये जाते हैं। इस भाग में सागोन की लकड़ी बहुत होती है।

(३) ज्वालामुखी पर्वतों की पेटी है। इस पेटी में ज्वालामुखी पर्वत तथा ज्वालामुखी पर्वतों की राख और लावा से बनी हुई मिट्टी के उपजाऊ प्रदेश हैं। इस भाग में धान की उपज बहुत होती है। इस भाग के अधिक ऊँचे भागों में वर्षा अधिक होती है और इसी

कारण बन भी अधिक हैं। वर्षा का पानी धान की खेती के सींचने के काम आता है।

(४) दक्षिणी तट की परतदार पर्वत की श्रेणी जिसमें तृतीय श्रेणी की चट्टान और बलुहे पत्थर की चट्टान है। इस भाग की भूमि पथरीली है और घने बन हैं जो सदैव हरे भरे रहते हैं। बनों के कारण उत्तरी भाग दक्षिणी भाग से अलग हो जाता है। मीऐंगेर और बंटम के प्रदेश में रबर की उपज की जाती है और बन धीरे धीरे कम हो रहे हैं।

(५) दक्षिणी तट की सँकरी पट्टी जो मूंगे की बनी है और अधिक निचली है।

उत्तरी निचले मैदान की भूमि कछारी है। नदियों के डेल्टा से भूमि बढ़ती जा रही है। नदियों द्वारा जो मिट्टी बह कर आती है उससे नदी का तल ऊँचा होता जाता है। इस कारण बाढ़ द्वारा हानि होने का बड़ा भय रहता है। इस भाग में २० लाख एकड़ भूमि में खेती होती है और लगभग २० लाख एकड़ भूमि खेती के योग्य बनाई जा रही है। इस भाग में सिंचाई तथा बाढ़ के

प्रकोप को रोकने में १,५०,००,००० रुपया सालाना खर्च किया जा रहा है।

जावा की खेती दो भागों में बँटी है। एक भाग तो वह है जिससे वहां के निवासियों की खेती की गणना है और दूसरे वह जहाँ वाटिकायें लगाई जाती हैं और खेती सरकार द्वारा कराई जाती है। जावा के अधिकांश भाग सरकारी सम्पत्ति है। यह जावा के किसानों को ठीके पर उठाई जाती है। पश्चिमी जावा में योरुपीय तथा चीनी लोगों की निजी भूमि है।

जावा की मुख्य उपज धान है। जावा में धान की उपज ८३,५०,००० एकड़ भूमि में होती है। वर्षा के आरम्भ में धान के पौधे लगाये जाते हैं और सूखे ऋतु के आरम्भ में काटे जाते हैं। धान की कटाई के बाद या तो खेतों में दूसरी कोई वस्तु बोई जाती है अथवा वे बञ्जर छोड़ दिये जाते हैं।

जावा की जन संख्या इतनी घनी है कि वहां की उपज से वहां का भरण पोषण नहीं हो सकता। जावा में प्रत्येक वर्ग मील में ७१७ मनुष्य रहते हैं। इसी कारण जावा में भोजन सामग्री बाहर से मँगानी पड़ती है।
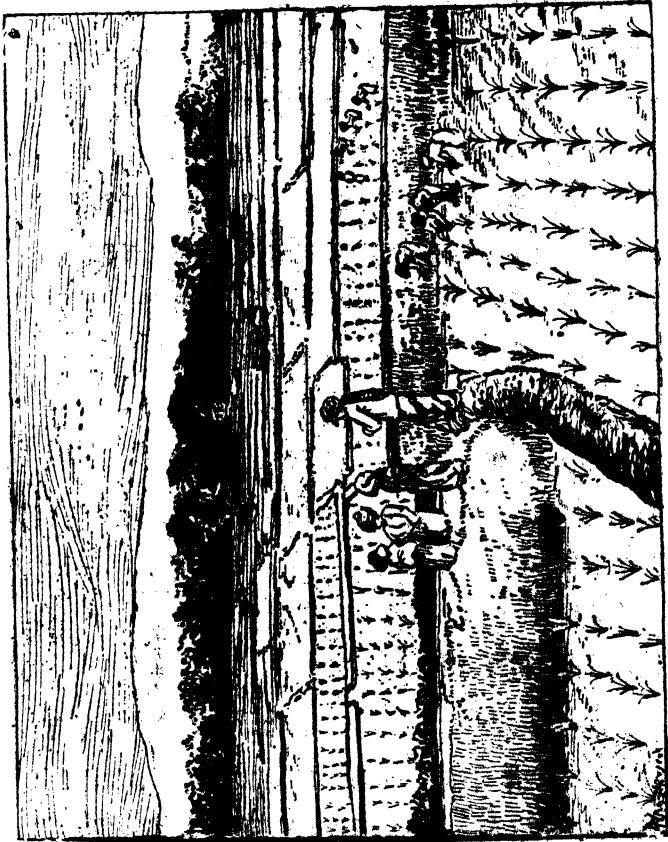
धान के पौधों का लगाना।

जावा में मक्का की खेती ४८,५०,००० एकड़ भूमि में, कहवा की खेती १६,८०,००० एकड़ में, शकरकन्द की खेती ४,२०,००० एकड़ में, मूंगफली ४,८५,००० एकड़ में, सोयाबीन ४,२१,००० एकड़ में, दूसरी दालों की खेती ५,२३,००० एकड़ में, तम्बाकू ३,४७,००० एकड़ में, आलू ४५,००० एकड़ में, ईख ३८,००० एकड़ में, नील ११,६५० एकड़ में, लाल मिर्च १,४०,००० एकड़ में और चाय की खेती ६६,५०० एकड़ भूमि में होती है और दूसरे प्रकार के पौधों की खेती १,८५,००,००० एकड़ भूमि में होती है।

निर्यात के लिये जावा की खेती योरुपीय लोगों द्वारा की जाती है। निर्यात वाली वस्तुओं में चीनी का नम्बर सबसे बढ़ कर है। जावा में ईख की उपज ४५ लाख एकड़ भूमि में की जाती है। इस भूमि से २३ लाख टन (लगभग ६,४४,००,००० मन) चीनी तयार होती है। जावा में ईख के १८० कारखाने हैं। मध्यवर्ती तथा पूर्वी जावा में ईख की उपज अधिक होती है। जावा के खेतों में प्रति एकड़ ४० टन (११२० मन) की उपज होती है। जावा से संसार में (क्यूबा को छोड़ कर) सबसे अधिक चीनी निर्यात की जाती है। संसार की

चीनी की समस्त उपज का १० प्रतिशत जावा में होता है।

कहवे का एकत्रित करना।

चाय की उपज का दूसरा नम्बर है। चाय अधिकतर पहाड़ी ढालों पर उगाई जाती है। जावा में

११,६०,००,००० पौंड चाय प्रति वर्ष उगाई जाती है। इस उपज का ६० प्रतिशत चीनियों तथा योरुपीय लोगों द्वारा होता है। क़हवा की उपज अधिकतर पूर्वी जावा के पर्वतों पर होती है जहाँ पर अधिक वर्षा नहीं होती है।

रबर बनाने के लिये रबर के वृक्षों का दूध एकत्रित करना।

पिछले कुछ सालों में जावा में रबर की उपज अधिक हो गई है। तम्बाकू की उपज जावा में खूब होती है। जावा की तम्बाकू संसार में प्रसिद्ध है। मध्यवर्ती भाग में जोकियाकार्टा, सुराकार्टा के चारों ओर तम्बाकू अधिक लगाई जाती है। कोको की उपज

साल में ७७५ टन (लगभग ८०,७०० मन) की होती है। सिनकोना की उपज जावा में बहुत होती है। संसार की समस्त आवश्यकता जावा की कुनैन द्वारा ही पूरी होती है। प्रीएँगर और बन्दूग में ४ हज़ार से ६ हज़ार फुट की ऊँचाई तक कुनैन की उपज होती है। जावा में कोकीन की उपज भी काफी होती है और संसार की आवश्यकता के अधिकांश भाग की पूर्ति जावा से ही होती है। कोकीन कोको के पेड़ की पत्तियों से तयार की जाती है।

जावा में २० लाख बैल, ३० लाख और दूसरे पशु हैं जिनमें गाय भी सम्मिलित है। गायें पर्वतों के ऊपर चरागाहों में पाली जाती हैं। जावा में १२½ लाख बकरियां, ८ लाख भेड़ और एक लाख सुअर हैं। बकरी, भेड़ और सुअर चीनी लोगों द्वारा पाले जाते हैं।

दक्षिणी पर्वतों पर अधिक बन हैं। सागौन के बन मध्यवर्ती और पूर्वी जावा में हैं। सागौन के बन १८,००,००० एकड़ भूमि में पाये जाते हैं। सागौन उन्हीं स्थानों पर उगता है जहाँ की जलवायु शुष्क होती है और ८० इंच वर्षा होती है।
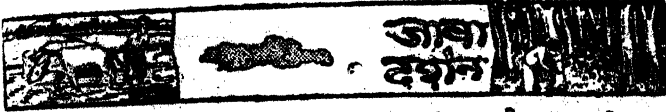
जावा में बाँस के हैट, ताँबे के बर्तन बनाने का रोज़गार बहुत होता है। कपड़े पर छपाई और रंगाई तथा बेल बूटों के काढ़ने का काम भी खूब होता है।

कपड़े का हैट (टोप) बनाना।

देश दर्शन

अपार सागर की स्त्री

यद्यपि बालू का समुद्र (रेगिस्तान) सुनसान तथा उजाड़ है परन्तु वहां पर जानवरों की हड्डियां जो इधर उधर छितराई हैं वे अपनी कहानी स्वयम् बतलाती हैं। रात के समय यहां पर शेर और तंदुओं का अच्छा शिकार किया जा सकता है। जंगली कुत्तों के समूह घूमते दिखाई पड़ते हैं। यहां के मार्गों में सांड तथा गाएँ बहुधा आदमियों पर आक्रमण कर बैठती हैं। जो लोग इनसे बचना चाहते हैं वे तोसारी से पसूखान वाली सड़क होकर जाते हैं। पसूखान नगर किसी समय में जावा का सबसे धनो नगर था। पसूखान से बनयूवीरू तक की यात्रा बड़ी सुहावनी होती है। बनयू बीरू नदी का पानी नीला है। इसमें लोग सुख से स्नान करते हैं। इस स्थान पर बन्दरों का राजा एक बड़ा बन्दर है वह सारे बन्दर समूह पर राज्य करता है। बन्दर लोग भिक्षा भी माँगते हैं। ऊसबूलन स्थान पर जावा निवासी स्नान करना अधिक पसंद करते हैं। इस स्थान पर पानी अधिक बेग के साथ निकलता है। बानयू बीरू

में कुछ मूर्तियां प्राचीन हिन्दू काल की हैं जिनकी पूजा जावा निवासी बड़े भाव से करते हैं।

इन मूर्तियों की पूजा के सम्बन्ध में एक कहानी प्रसिद्ध है। एक बार विनोगन के राजा का पुत्र पनगेरन बाबू शिकार खेल रहा था। वह एक नदी के किनारे आया। उसने अपने एक सिपाही से कहा कि वह नदी के उद्गम तथा बहाव के स्थान का पता लगावे जिससे नदी का प्रयोग सिंचाई के लिये किया जा सके। जब नदी के उद्गम का पता चल गया तो राजकुमार ने देखा कि नदी अपने उद्गम के समीप बहुत पतली है तो उसे सिपाही पर क्रोध आ गया और उसे झूठा जानकर उसने अपना भाला उसकी छाती में भोंक दिया। जब सिपाही का खून नदी के पानी से मिला तो नदी बड़े बेग से बहने लगी और उसी में राजकुमार और उसके सभी साथी बह गये। उसी से नीले पानी का धनी कुआं बना है। उसी से राजकुमार की भूमि की सिंचाई हुई। उसी राजा के वंशज अब तक नदी में स्नान करने जाते हैं और अच्छी उपज तथा और दूसरी सुन्दर वस्तुओं का बदान मांगते हैं। लोरोवन के समीप अजगर सांपों की बड़ी बड़ी मांदें हैं। इन मांदों में चूहे और

चमगादड़ बहुत रहते हैं। साँप इन्हीं का भोजन किया करते हैं। चूंकि उन्हें भोजन घर बैठे मिलता है इसलिये वे अपने स्थान से कहीं नहीं जाते हैं। वे बहुत बड़े बड़े होते हैं। उन्हें लोग पकड़ कर ले जाते हैं और अधिक दाम पर बेंचा करते हैं।

सुराबाया का नगर जावा में एक व्यापारिक नगर है। यह डच ईस्ट इन्डिया कम्पनी की एक धनी बस्ती थी। मालिक मोहम्मद इब्राहीम की शिक्षा से यहां पर मुसलमान बच्चों का अनाथालय खोला गया है। सुराबया काली मास नदी के मुखड़े पर बसा है। काली मास नदी को स्वर्ण धारा भी कहते हैं यह ब्राँटस की एक शाखा है। ब्रांटस जावा की एक दूसरी बड़ी नदी है। सुराबया में योरुप निवासी, चीनी और जावा के निवासी रहते हैं उत्तरी तट के मध्यवर्ती प्रान्तों का प्रसिद्ध बन्दरगाह तथा व्यापारिक केन्द्र समरॉंग है। दक्षिणी तट हिन्द महासागर का है यह तट पहाड़ी है और उसकी ऊँचाई ५ हज़ार से १० हज़ार फुट तक है। जावा चारों ओर से समुद्र द्वारा घिरा है। वह ज्वालामुखी पर्वतों की दया पर चल रहा है। किसी समय भी वह समुद्र में डूब

सकता है। इसी कारण जावा को लोगों ने अपार सागर की स्त्री कहा है। जावा समुद्र से ही निकला है और उसका अन्त भी समुद्र में ही होगा। जावा निवासियों के विश्वास के अनुसार रात लोरो किड्ल नामक परी समुद्र के लहर के बीच में रहती है। वह भूकम्प आने का सन्देश शीघ्र ही जावा निवासियों को दे देती है। जब भूकम्प अथवा ज्वालामुखी पर्वतों के उबाल की सूचना समुद्र की लहरें देती हैं। पानी समुद्र के ५ हज़ार से १० हज़ार फुट की गहराई तक का उबलने सा लगता है और उसकी लहरों की दशा भयानक हो जाती है।

रात लोरो किड्ल पजागारन के राजा प्रभुमूंडिंग बांगी की पुत्री थी। उसका नाम ऊद था। वह बड़ी सुन्दर तथा पुरातात्मा स्त्री थी। उसका ब्याह एक दूसरे राजा के ज्येष्ठ पुत्र से तय हुआ था ब्याह के समय राजकुमारी को ऐसी छूतवाली बीमारी हो गई जिसकी औषधि राज्यवैद्यों के पास न थी। राजकुमारी ने परेशान होकर अपने पिता के दर्बार को छोड़ दिया और समुद्र के समीप एक गुफा में जाकर बास करने लगी। वह धार्मिक कार्यों तथा गरीबों की सेवा में अपने दिन व्यतीत करने लगी जिससे देवतागण प्रसन्न होकर उसे

अच्छा कर दें। यद्यपि उसने सभों की सहायता किया और बहुत से अद्भुत कार्य किये परन्तु फिर भी वह अपनी सहायता न कर सकी। धीरे धीरे उस साध्वी की प्रशंसा चारों ओर फैल गई और उसका प्रेमी राजकुमार (जिससे उसकी शादी होने को थी) उस साध्वी के पास अपने प्रेमिका की खोज में पहुँचा। राजकुमार ने राजकुमारी को पहचान लिया और उससे अपनी स्त्री बनने की प्रार्थना किया परन्तु राजकुमारी ने इन्कार कर दिया और राजकुमार से चले जाने के लिये कहा। राजकुमारी को भी राजकुमार से प्रेम था इसलिये उसने राजकुमार से दूसरे दिन आने के लिये कहा। उसके पश्चात् वह समुद्र के तट पर पहुँची और समुद्र में प्राण हत्या के ख्याल से कूद पड़ी। समुद्र की लहरों द्वारा उसका शरीर स्वच्छ हो गया और समुद्र की लहरें उसे समुद्र के भीतर एक बड़े महल में ले गईं जिसमें उसके लिये नौकरानियां तथा सहेलियां पहले से ही मौजूद थीं। सभों ने राजकुमारी का रात लोरो किदल कह कर सत्कार किया। वह दक्षिण की रानी हो गई और उसने अपने साम्राज्य में शासन करने के लिये चारों ओर अपने
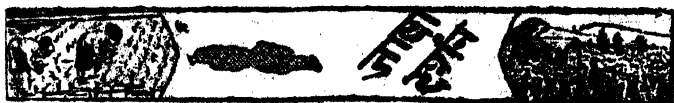
सहायक नियुक्त कर दिये। जावा के राजा किसी भी कार्य को आरम्भ करने के पहले रातू लोरो किदूल की सहायता तथा राय की प्रतीक्षा करते हैं। रातू लोरो किदूल की पूजा के लिये जोग्जाकर्ता और सुराकार्ता के संगम पर एक मन्दिर बना है। वहां और ऐम्बल में जावा निवासी बहुत बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। एक मास के उपवास के पश्चात् दक्षिण की रानी का सत्कार करते और समुद्र में स्नान करते हैं। जावा निवासियों का विश्वास है कि ऐसा करने से उनका साल भर का पाप दूर हो जाता है। रोंग कोब और करँक बोलोंग में रानी के सैनिकों का मान्य है। जावा निवासी गाना बजाना करके रानी की याद में खुशी मनाते हैं और रानी को प्रसन्न रखने की चेष्टा करते हैं।

मल्लाह लोग दक्षिण की रानी के भय से अपने बोट दूर समुद्र के भीतर नहीं ले जाते हैं। उनका विश्वास है कि यदि वे रानी के नाच-गान घर की झंकार सुन लेंगे तो वे अपने बोटों को समुद्र के भीतर दूर तक खेते चले जावेंगे और कभी भी वापस न लौटेंगे।

चिलाचाप दक्षिणी तट पर एक प्रधान बन्दरगाह

है। बन्दरगाह में अब भी नूसा कम्बंगन के द्वीप के नगाड़े का शब्द सुनाई पड़ता है। नूसा द्वीप में एक मन्दिर है। उसे प्रार्थना का शिला-घर कहते हैं। उस मन्दिर में उस साधु का स्मारक है जिसने नासू द्वीप की उत्पत्ति की है।

जावा में "विजय कुसुरु" नामक एक सुन्दर पुष्प होता है। प्रत्येक राजा गद्दी पर बैठते समय इस फूल से अपने को सजाता है। इस फूल की उपज संसार में और कहीं नहीं होती है और यह फूल तभी खिलता है जब किसी राजा को राजगद्दी के लिये आवश्यकता होती है। इस अद्भुत फूल का आदर जावा निवासी बहुत करते हैं और इसे तोड़ने के लिये सुराकार्ता राज्य प्रधान राज्याधिकारी लोग जाते हैं।

नदियाँ तथा मैदान

जावा की अधिकांश नदियाँ उत्तर की ओर गिरती हैं। कुछ नदियाँ पूर्वी तट की ओर सोलो और ब्रांटस पूर्व की ओर पर्वतों के कारण घूम जाती हैं। यह दोनों नदियाँ जावा की सबसे बड़ी नदियाँ हैं। सोलो नदी की लम्बाई ३१० मील हैं और इस नदी में सुराकर्ता तक नावें चल सकती हैं। ब्राँटस नदी में केदीरी स्थान तक जहाज चलाये जा सकते हैं। दक्षिण की ओर की नदियां तेज़ बहती हैं और पर्वतीय प्रान्त होकर बहती हैं पश्चिम की ओर तारूम और मनूक नदियों में कुछ दूर तक नावें चल सकती हैं। जावा की समस्त नदियां सिंचाई के लिये प्रयोग की जाती हैं।

पूर्व की ओर जपरा का मैदान ज्वालामुखी पर्वतों की राख से बना है। जुवाना, रेमबंग और सुराबया के मैदान समुद्री बालू और मिट्टी के बने हैं भीतरी मैदान ज्वालामुखी हैं। दक्षिणी तट के मैदान दलदली तथा बालू के ढेर हैं। मध्यवर्ती तथा पश्चिमी जावा के मैदानों की भूमि उपजाऊ है। इन मैदानों के निचले भाग में दलदल तथा मूँगे वाली भूमि है। उत्तरी पिछले

समुद्र में गिरने वाली नदियों ने समतल बालू और कीचड़ का मैदान बना दिया है। उत्तरी तट जंगली और पहाड़ी है। पश्चिम की ओर चेरीबोन के आगे आम तथा नारियल के पेड़ हैं। दक्षिण की ओर गहरे समुद्र की लहरें नदियों के मुहाने की कीचड़ बहा ले जाती हैं परन्तु वे बालू के ढेर लगा देती हैं। जिनसे नदियों का मुंह बन्द हो जाता है। जावा में चूने वाले पत्थरों की पहाड़ियां समद्र तल से १६ सौ फुट ऊँची हैं।

जलवायु

जलवायु तथा वर्षा

यद्यपि जावा उष्ण-कटिबन्ध में स्थित है तो भी वहां भीषण गरमी नहीं पड़ती है। जावा का औसत ताप क्रम ७८ से ८० दरजे तक रहता है। समुद्र तथा वहाँ के पर्वत जावा की जलवायु को ठंडा कर देते हैं। जावा की जलवायु, वर्षा, बादल और समुद्री हवा के कारण शीत हो जाती है। ५ हज़ार फुट की ऊँचाई पर २७ अंश तापक्रम रहता है। पहाड़ों का समान ताप ३८ अंश रहता है। बटाविया प्रान्त का सबसे कम औसत ताप ६६ अंश और सबसे अधिक औसत ताप ६९ अंश तथा असेम्बगस का ६२ और ६६ अंश, तोसारी का ४६ तथा ७१ अंश रहता है। तटीय नगर संध्या को ६ बजे अत्यन्त शीत हो जाते हैं और एक बजे दिन को वे अत्यन्त गरम रहते हैं।

जावा में उत्तरी-पश्चिमी मानसून दिसम्बर से मार्च तक रहता है जिससे उत्तर की ओर अधिक वर्षा होती है और बादल बहुत रहते हैं। अप्रैल से अक्तूबर तक दक्षिणी-पूर्वी मानसून रहता है जिससे दक्षिणी तट पर

कुछ वर्षा होती है परन्तु अगस्त में बटाविया में कड़ाके की धूप होती है। जावा में भीषण तूफान नहीं आते हैं परन्तु दोपहर के बाद आँधी आती है, बादल गरजते हैं और बिजली की कड़क होती है। रात में उत्तरी पश्चिमी मानसून की तेज़ वायु चलती है। बटाविया में प्रत्येक साल औसत से १२२ बार बादल की गरज और बिजली की चमक के साथ आंधी आती है। उत्तरी-पश्चिमी मानसून ६ हज़ार फुट की ऊँचाई तक पहुँचता है। इसके ऊपर दक्षिणी-पूर्वी हवा चला करती है।

जावा में भिन्न भिन्न स्थानों में भिन्न भिन्न मात्रा में वर्षा होती है। बनगूमास में क्रांगन स्थान पर ३२७ इंच साल में वर्षा होती है। सिराह कुचोंग केदीरी में ३४१३ फुट ऊँचा है। वहाँ एक बार ३६६ इंच वर्षा हुई थी। जनवरी मास में वर्षा सब से अधिक होती है। बटाविया में वर्षा की औसत ७१'३१, चेरीबोन में ६०'३८ बन्यूवाँगी में ५६'५८ बूयटेन जोर्ग में १६८'६३, बन्दूँग में ७४'७०, चिलाचाप (दक्षिणी तट का स्टेशन) १५२'२५, कालीसात में ६२'४ और असेम्बागुस में

३५ इंच साल में वर्षा होती है। चेरीभाज पर्वत से बन्यवाँगी तक सब से अधिक वर्षा होती है। वर्षा का समय पश्चिम की ओर १२ से ५३ दिन तक, और पूर्व में १४ से ११६ तक है। एक बार स्टुबोंडो में २२७ दिन तक वर्षा हुई थी।

जावा का इतिहास

पूर्तगाल वालों के जाने के पहले का इतिहास दो भागों में बँटा है (१) हिन्दू काल (२) मुसलिम काल। कहा जाता है कि पहली सदी में हिन्दू लोग जावा गये थे। बारहवीं सदी में जावा में चार हिन्दू राज्य थे उसके पश्चात् मजापहित साम्राज्य १३७६ अथवा १३७८ ई० में स्थापित किया गया। यह साम्राज्य लगभग १०० सालों तक चला उसके पश्चात् मुसलमानों ने हिन्दू सामाज्य को छिन्न-भिन्न कर डाला। जावा में हिन्दुओं ने सभ्यता का अच्छा प्रचार किया था। बैरोस का कहना है कि जब पुर्तगाल वाले जावा पहुँचे तो उन्होंने जावा के निवासियों को पूर्वी द्वीप समूह के निवासियों में सबसे अधिक सभ्य पाया। आर्कीपिलोगो के दूसरे निवासी मल्लाई तथा समुद्री डाक का काम करते थे।

मजापहित साम्राज्य के नष्ट होने पर जावा फिर कई भागों में बँट गया। १५७८ ई० में मतरम प्रान्त के गवर्नर ने राजा की उपाधि ली और मतरम नामक साम्राज्य स्थापित किया। डच लोग १५९५ ई० में जावा

पहुँचे। १६०२ ई० में डच ईस्ट इँडिया कम्पनी बनाई गई। १६१० में प्रथम डच गवर्नर की नियुक्ति हुई उसी समय डच लोगों को बटाविया के समीप किला बनाने की आज्ञा मिल गई। १६७७ ई में अकार्ता का डच लोगों को दिया गया। उसके बाद लगभग सवा सौ सालों तक डच तथा जावा के राजों के मध्य युद्ध होता रहा। हर एक युद्ध में डच लोगों की शक्ति बढ़ती ही चली गई। मतरम के साथ संधि करने पर १७०५ ई में में डच लोगों को प्रीऐंगेर स्थान मिला। १७४५ ई० में समस्त उत्तरी-पूर्वी तट में डच शासन चलने लगा। १७५५ ई० में मतरम साम्राज्य सुराकर्ता और ओकजाकर्ता राज्यों में बँट गया। इन राज्यों के राजों ने हालैंडके महाराजा को अपना राजा स्वीकार कर लिया १८०८ ई० बन्तम का राज्य जीता गया। नैपोलियानिक काल के अन्त में फ्रांस ने जावा पर अपना अधिकार जमाना चाहा जिसके कारण अँग्रेज़ लोग जावा पहुँचे और वेल्टेवरेंडेन स्थान पर फ्रान्सीसियों की पराजय हुई। उस समय स्टेम्पोर्ड रैफ्लेस जावा का लेफ्टिनेस्ट गवर्नर बनाया गया। जावा का गवर्नर भारत के गवर्नर-जनरल लार्ड मिन्टो के अधिकार में था। रैफ्लेस के

पहले डेनडल्स गवर्नर बनाया गया था। डेनडल्स बड़ा निर्दयी था। उसने जावा पर इतना कर लगाया कि जावा धन से बिलकुल खाली हो गया जब रैफ्लेस आया तो उसने शीघ्र ही शासन प्रणाली को बदल दिया, बेगार नज़राना आदि बन्द कर दिया और खेती तथा न्याय के क़ानूनों में सुधार किया। १८१६ ई० में जावा फिर डच लोगों को वापस कर दिया गया १८२५ ई० में जावा में डच सरकार के विरुद्ध ग़दर हो गया और ५ साल तक लगातार जारी रहा। १८३६ ई० में बैरन वान डेन बोसन की नीति के अनुसार जावा पर अत्याचार आरम्भ हुआ और ज़बरिया टैक्स वसूल किया गया। कहा जाता है कि जावा की ५० लाख की जन-संख्या से हालैंड ने १६,६०,००,००० पौंड (लगभग २,४६,००,००,००० रु०) १२ सालों में वसूल किया था। १८४८ से १८८८ ई० तक में जावा में कई बार ग़दर हुआ। १८५४ ई० में डच सरकार ने जावा के लिये ऐसे नियम बनाये जिससे जावा की आर्थिक और राजनैतिक स्थिति में सुधार होने की झलक दिखाई पड़ी। उस समय में जावा के गवर्नर वहां के

निवासियों को जावा घूमने के लिये जो पासपोर्ट लेना

जावा में मछली के शिकार का व्यवसाय।

पड़ता था उसे बन्द कर दिया। नज़राना और बेगार

बहुत कम कर दिया और मछली मारने तथा बेंचने का एकाधिकार जो डच लोगों को प्राप्त था उसे बन्द कर दिया। प्रायमरी शिक्षा और पेनल कोड का प्रचार १८७२ ई० में किया गया। उसके पश्चात् से जावा का शासन अच्छा हो रहा है। १६०३ ई० में जावा निवासियों को स्थानीय कार्यों में कुछ अधिकार दिये गये। स्थानीय अधिकारों की बृद्धि धीरे धीरे होती गई और १६१६ ई० जावा में बोल्क्सराद (जनता की कौंसिल) की स्थापना हुई। शिक्षा, जापान के उदाहरण, चीनी क्रान्ति भारतीय स्वराज्य आन्दोलन, संसार की जातीय तथा राष्ट्रीय अशान्ति आदि का प्रभाव जावा निवासियों पर पड़ा है। जावा के नर्म दल वाले लोग उपनिवेशिक स्वराज्य का दम भरने लगे हैं और गर्म दल वाले लोग पूर्ण स्वतंत्रता के लिये भर सक प्रयत्न कर रहे हैं। १६२२ ई० में जावा विधान में फिर से कुछ परिवर्तन हुआ था उसके बाद जावा पर कुछ बन्धन फिर लगाये गये थे परन्तु हाल के गवर्नर जनरल जावा निवासियों को जनता की कौंसिल में अधिक से अधिक स्थान देने के बारे में अपनी अनुमति दे दी है।

जावा के देशी राज्य

जावा के सुल्तान (राजा) तथा सुसुहुनान की यदि पूरी उपाधि लिखी जाय तो इस छोटी पुस्तक का एक पूरा पृष्ट भर जायेगा। सुसुहुनान का अर्थ आदरणीय अथवा पूजनीय होता है। सुल्तान का नाम हमंगकू भुवन (संसार का शासक) अष्टम और सुसुहुनान का नाम पाकू भुवन (संसार की कीली) दशम् है। सुल्तान का ज्येष्ठ पुत्र जोग्जाकार्ता का राजकुमार है। सुनान के कोई असल पुत्र नहीं है। जावा के राज्य-भवनों को क्राटोन कहते हैं। क्राटोन में केवल राजा-रानी और राज्य घराने के रहने वालों के ही स्थान नहीं हैं वरन् वहाँ पर एक समूचा नगर बसा रहता है। चारों ओर से पक्की मजबूत दीवार रहती है जिसमें कई द्वार होते हैं। भीतर सड़कें, गलियाँ और खुले मैदान तथा वाटिकाएँ होती हैं। राज्य-महल के साथ ही साथ भीतर राज्य दर्बार का प्रधान कर्मचारियों, नौकरों आदि के रहने के लिये भी मकान बने रहते हैं। सोलो के क्राटोन में लगभग १० हज़ार लोग रहते हैं जो राज्य-दर्बार से सीधे तौर पर सम्बन्ध रखते हैं।

क्राटोन के भीतर एक बड़ा मकान प्रार्थना के लिये होता है। पुजारी का निवास स्थान भी वहीं होता है। सुनार, बढ़ई, लोहार, मकान बनाने वाले, हथियार तयार करने वाले, लकड़ी के कारीगर, संगीत चातुर्य और राजा के बाजा बजाने वाले सभी लोगों के निवास स्थान भीतर ही होते हैं।

प्राचीन हथियार कहीं कहीं पर रक्खे हुये मिलते हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध न्याही सतोमी है। यह न्याही सतोमी (बटाविया में पियाँग द्वार के समीप की बड़ी तोप) की स्त्री मानी जाती है। कहा जाता है कि इस तोप में एक शक्ति (देवी) रहती है जो सुसुहुनान को खतरे का संकेत देती है। जोग्जा का क्राटोन १७६० ई० का बना है। यह चारों ओर डच तोपों स्वरक्षित रुस्तेन बर्ग नगर भी उसी साल का बना है जिसमें एक बड़ा भवन मेहमानों का स्वागत करने के लिये बनाया गया है। सुल्तान का महल कई एक दीवारों द्वारा संसार से अलग है। सब से भीतरी द्वार को श्री मंगन्ती कहते हैं। इस द्वार पर स्त्री रक्षकों का पहरा रहता है। यह स्त्री पहरेदार न्याही तुमेनगूँग की अध्यक्षता

में रहती हैं। तुमेनगूँग एक बड़े ऊँचे पद की स्त्री होती है। सुसुहुनान के शरीर-रक्षक बौने होते हैं जो बड़ी फुर्ती के साथ हँसाते हुये कार्य करते रहते हैं।

जोग्जा का दर्बार सोलो के दर्बार से अधिक कट्टर है। सुनान दर्बार ने कट्टरपन को त्याग दिया है और अपने तीन पुत्रों को बाहर शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजा है। पहले राज्य घराने की स्त्रियाँ अपने दाँत काले कर लेती थी परन्तु अब यह रिवाज कम हो रहा है। दर्बार की स्त्रियां और मर्द अब धीरे धीरे योरुपीय भेष भी बदल रहे हैं।

जावा के प्राचीन रीत-रिवाजों का अध्ययन वहां के देशी दर्बारों में भली भांति किया जा सकता है। वहां के नियम चाहे दर्बार के हों और चाहे प्रजा के बीच के हों सभी बड़े कड़े हैं। राजा के जन्म दिवस और राजगद्दी के दिन प्रत्येक साल बड़े समारोह के साथ मनाये जाते हैं। दर्बार में कोई भी मनुष्य जा सकता परन्तु उसे आज्ञा लेनी पड़ेगी। निमंत्रित लोग संध्या समय के भेष में एकत्रित होते हैं। अफसर तथा सभासद लोग अपने भेष में आते हैं और चीनी सर्दार अपने राष्ट्रीय भेष में आते हैं। राजा से मिलने का समय सवेरे नव या दस बजे होता है।

उत्सव के दिन प्रातः काल ही से क्राटोन सजा दिया जाता है। रमज़ान का २१वाँ दिन सुसुहुनान के लिये, २३वाँ दिन राजकुमार के लिये जो गद्दी पर बैठने वाला होता है, २५वाँ दिन दूसरे राजकुमारों के लिये, २७वाँ दिन रोदन आदि पति के लिये और २६वाँ दिन तुमेंगूँग के लिये होता है। देशी अफसर अपने सैनिकों, गाने वालों और झंडों के साथ क्राटोन के सामने मैदान में खड़े होते हैं। सुनान अथवा सुल्तान के दूत रेज़ीडेन्ट के पास जाते हैं और उसे राजा के तयारी की सूचना देते हैं। इनके बाद रेज़ीडेन्ट डच सेनापति के साथ दर्बारी गाड़ियों आगे आगे चलते हैं उसके बाद असिस्टेन्ट रेज़ीडेन्ट, राजकुमार मांगकू नेगोरो अथवा पाकू अलम की गाड़ियाँ रहती हैं। इनके साथ इनके मुसाहब लोग भी रहते हैं। उसके बाद और दूसरे लोगों की गाड़ियाँ आती हैं। मैदान में आने पर जुलूस का स्वागत बड़े समारोह से गाने बजाने के साथ किया जाता है। सभी लोग सलामी देते हैं। बाहरी द्वार पर रेज़ीडेन्ट उतर जाता है और सुनहरी चाँदनी में प्रवेश करता हो उसका स्वागत राजा के पुत्र करते हैं। उससे

आगे रेज़ीडेन्ट का स्वागत गद्दी लेने वाला राजकुमार करता है। राजकुमार रेज़ीडेन्ट का हाथ पकड़ कर सत्कार करने वाले कमरे में ले जाता है जहाँ गाने बजाने के साथ स्वागत होता है। शुक्रवार का दिन पड़ता है तो गाना बजाना नहीं होता है।

राजगद्दी वाले कमरे के द्वार पर राजकुमार लोग हट जाते हैं और रेज़ीडेन्ट बढ़कर राजा से मिलता है और उसे अपने बाईं ओर बैठाता है। रेज़ीडेन्ट के बाईं ओर डच सेनापति बैठता है उसके बाद सभी डच अफसर बाईं ओर अपने स्थानानुसार बैठते जाते हैं। राज्य घराने के लोग राजा के दाईं ओर बैठते हैं। आपस में नमस्कार प्रणाम होने के बाद राजा, रेज़ीडेन्ट, सेनापति और असिस्टेन्ट रेज़ीडेन्ट रानी के कमरे में जाते हैं। वहाँ से लौट कर सभी लोग मैदान में आते हैं और वहां पर सिपाहियों तथा सभी लोगों की मार्च तथा ड्रिल होती है। इसके समाप्त होने पर तिकोनी टोकरी में लोगों को चावल, खाना, रोटी और मिठाइयां बहुत अधिक मात्रा में दिया जाता है। राजा के आने की घोषणा १६ मिनट वाली तोप से की जाती है। यह तोप क़िले से छुड़ाई जाती है। रेज़ीडेन्ट के घर पर आकर जुलूस

का अन्त होता है और सरकारी निमंत्रण के साथ उत्सव का अन्त होता है।

इन उत्सवों में लोग बड़े चाव के साथ एक दूसरे से खुशी खुशी मिल सकते हैं और राजा से बात चीत कर सकते हैं। एक बार का ज़िक्र है कि उत्सव देखने वालों में से एक व्यक्ति राजा से बातें करता हुआ राजा से पूछ बैठा आपके कितने पुत्र हैं। राजा ने सभ्यता का ध्यान रखते हुये उत्तर नहीं दिया और बातें करता रहा केवल चुपके से राजा ने घूम कर अपने सभासदों में से एक को आज्ञा दिया "किसी के राज्य-महल में भेज कर पूछो मेरे कितने लड़के हैं"। एक के पश्चात् दूसरे द्वारा यह प्रश्न अन्त वाले व्यक्ति तक पहुँचा वह महल में गया और लौट कर फिर अपने स्थान पर खड़ा हो गया और अपने पास के आदमी से उत्तर बतला दिया। उसी प्रकार एक के पश्चात् दूसरे से होता हुआ वह उत्तर राजा को मिला। राजा ने उस व्यक्ति से कहा "मुझे आप से बतलाते हुये हर्ष होता है कि मेरे ८५ बच्चे हैं"।

विदेशी लोग जो राज्य दर्बार के उत्सव में जाते

उन्हें वह स्थान परियों का सा मालूम होता है। उन्हें प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक बात समझने की आवश्यकता होती है। उन्हें वहां कोई न कोई बतलाने वाला भी अवश्य ही मिल जाता है। वहां पर प्रत्येक छोटे से छोटे कार्य के लिये नौकर होता है इसी कारण चारों ओर हलचल तथा चहल-पहल रहती है। ऐसे उत्सवों में जो जावा स्त्रियाँ जाती हैं वे बड़े सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण धारण करके जाती हैं। उनकी नौकरानियाँ उनके साथ रहती हैं। उनका पानदान, उगालदान, शृंगारदान और दूसरे सामान सभी उनके साथ रहते हैं। श्रम्पी नाच में केवल १३ से १७ साल की लड़कियाँ ही सम्मिलित हो सकती हैं। बेडोयो नाच में लड़के अथवा लड़कियाँ दोनों कार्य कर सकते हैं। परन्तु नाच स्त्री-भेष में ही हो सकता है। श्रम्पी अथवा बडोयो नाच नाचने वाले अपनी कला का प्रदर्शन राज्य-दर्बार के सिवा और किसी दूसरे स्थान पर कदापि नहीं कर सकते। उन्हें साल के प्रथम दिवस, राज्याभिषेक के दिन और राजा के सालगृह के दिन ही राजसी भेष में नाचना पड़ता है। वहाँ का नाच योरुपीय ढंग से नहीं होता।

जावा के तमाशे

श्रमपिस और बोडेपोस सुल्तान और सुसुनान के दर्बार में नाचने गाने के लिये होते हैं। दूसरे देशी

दम्पति-नाच

सर्दार लोग भी नाचने वाली लकड़ियों को अपने दर्बार

में रखते हैं। यह लड़कियां ७ एक साथ नाचती गाती हैं। जावा के मामूली घरों के लोग रोनगेंग (नाचने गाने का पेशा करने वाली स्त्री) पर ही निर्भर रहते हैं। यह स्त्रियां द्वार द्वार लोगों के यहां अपनी सेवा का प्रदर्शन करने के लिये घूमती रहती हैं। वे पैसे की नौकर होती हैं और प्रत्येक स्थान पर नाच-गा सकती हैं। यह नाचने गाने वाली स्त्रियां भारतवर्ष की वेश्याओं की भांति होती हैं। उनके साथ उनके गाने बजाने वाले उस्ताद रहते हैं। जावा में गेमलेन नाच तथा गान घर होते हैं। इन स्थानों पर तबला, सितार, ढोलक, हारमोनियम आदि प्रत्येक भाँति के बाजे रहते हैं। एंगक्लोंग वहां का एक प्रकार का बाजा होता है जो बांसुरी के साथ बजाया जाता है। इसका स्वर कम सुरीला होता है। बाँसुरी बजाने का रिवाज वहां अधिक है।

जावा में घड़ियाल, घंटों का आदर अधिक है। जावा के स्वर्ण काल के ताँबे के घंटे अब भी मौजूद हैं और लोग उन्हें बड़े आदर-भाव से देखते तथा बजाते हैं। इनमें से एक घंटा लोडोयो में है। कहते हैं कि इस घंटे में शेरों का एक बड़ा समूह वास करता है।

प्राचीन काल की कथा है कि कोई हिन्दू राजा मुसलमानों से हार कर भागा और वह जाकर लोडोयो में ठहराया जब उसके बैरियों ने उसे घेर लिया तो उसने घंटे को बजाया। घंटे की आवाज़ पाकर जंगल से बहुत बड़ी संख्या में शेर आ गये। और उन्होंने यवनों को हड़प कर डाला। यह घंटा अब भी वहां है। प्रत्येक साल इस घंटे को दो बार स्नान कराया जाता है। कहते हैं कि जो इसका आदर करता है और इससे जो बरदान मांगता है वह पूरा होता है परन्तु जो व्यक्ति इसका निरादर करता है उसे शेरों द्वारा अवश्य कुछ न कुछ कष्ट मिलता है। जावा में चमड़े में तस्वीरें काट काट कर थियेटर दिखाने का रिवाज़ है। दक्षिण की ओर तटीय नगरों में थियेटर और ड्रामे भी होते हैं। ड्रामे में दुखान्त व सुखान्त नाटक सभी का मिश्रण होता है। शतरञ्ज, तास, चौपड़ आदि खेल खेले जाते हैं। इस प्रकार के चीनी तथा योरुपीय खेल खेले जाते हैं। इस प्रकार के चीनी तथा योरुपीय खेल खेले जाते हैं। डाक्रोन का खेल शतरञ्ज की भाँति ही खेला जाता है। इसमें १५ आदमी एक साथ खेल सकते हैं। ताश के

खेल कई प्रकार के होते हैं। इसमें जुवा भी होता है। जावा निवासी जुवा बहुत खेलते हैं और वे अपनी स्वतंत्रता का दांव भी जुवे में लगा देते हैं।

लड़के लोग अंधों का खेल, छिपने ढूँढ़ने का खेल, खरहे का खेल, गोली, घोंघा, सीपि आदि का खेल खेलते हैं। वे पतंग उड़ाते हैं, लट्टू नचाते हैं। लोहे के छल्ले से निशाना मारते हैं। पड़ाके छूड़ाते हैं। प्रत्येक खेल अपनी ऋतु में ही खेला जाता है। मचनान के खेल में एक लड़का शेर बनता है और २३ लड़के बैल बनते हैं। शेर बैलों का शिकार करने को दौड़ता है। और बैल उसे मारते हैं। लड़कियां गुड़िया की भांति एक खेल खेलती है। फटे पुराने कपड़े तथा कम्बल की एक गुड़िया बनाई जाती है उसे सभी तरह सजाया जाता है। जब वह सज धज कर तयार हो जाती है तो उससे भांति भांति के प्रश्न किये जाते हैं। जावा निवासियों का विश्वास है कि गुड़िये के अन्दर रसोई घर के देवते की आत्मा प्रवेश कर जाती है। लड़कियां अपने शादी के बारे में प्रश्न करती हैं। इस गुड़िया का नाम 'निनी टोओंग' रक्खा जाता है।

लड़के लोग झींगुर पालते हैं और उन्हें लड़ाते

जावा के ड्रामों में कलों द्वारा श्वेत परदे के पीछे से तस्वीरों के दिखाने का साधारण नियम।

यह एक धागे में बांध कर बांस के पिंजड़े में पाले जाते हैं और जब लड़ने के योग्य हो जाते हैं तो फिर बाहर निकाले जाते हैं। तीतर, बटेर और फाख्ता आदि भी इसी लिये पाले जाते हैं। बटेर जालों में पकड़े जाते हैं और उन्हें लड़ने की शिक्षा दी जाती है। बकरा भेड़ा, सुअर आदि भी पाले और लड़ाये जाते हैं। मुर्गों की लड़ाई बड़े मजेदार होती है। यह बड़ी दिलेरी के साथ लड़ते हैं और जब तक दो में से एक का अंत नहीं हो जाता अथवा अधिक घायल नहीं होता और सिर पर तीन बार चोट नहीं खाता तब तक युद्ध होता रहता है। मुर्गों के युद्ध में बाज़ी लगाते हैं। जब तक युद्ध होता है दोनों ओर के लोग उन्हें हिम्मत दिलाते रहते हैं। युद्ध के आरम्भ और अंत में घन्टा बजाया जाता है। पुलिस के आने पर भी मुर्गों का युद्ध बन्द कर दिया जाता है क्योंकि ऐसे समय बहुधा झगड़ा हो जाता है और एक दो आदमियों की मृत्यु भी हो जाती है। इसलिये सरकारी नियमानुसार मुर्गों के लड़ाने की मनाही है।

सार्वजनिक त्योहार और ज्योनार

जावा के निवासी बड़े सामाजिक होते हैं। वे ज्येनार के बड़े शौकीन होते हैं। उनका विश्वास है कि जब वे उत्सव मनाते हैं, ज्योनार करते हैं और खेल तमाशों में व्यस्त होते हैं तो देवी उनसे बहुत प्रसन्न होती है। त्योहार प्रार्थना के साथ आरम्भ किये जाते हैं। प्रार्थना किसी पवित्र पुरुष द्वारा आरम्भ की जाती है। ज्योनार के खर्च के लिये प्रबन्धकर्ता को प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ अवश्य देता है। जावा में कोई भी प्रधान काम बिना 'सेदाक़ाह या स्लामान' के बिना नहीं किया जाता है। शादी, मृत्यु, जन्म, बीमारी से अच्छा होने पर, ख़तरे से बचने पर, मुक़दगे के जीतने पर, बाढ़ से बचने पर, अकाल पड़ने के पश्चात् और पहले, फसल के तयार होने पर, बीज बोने आदि अवसरों पर उत्सव बनाया जाता है।

हालैण्ड की रानी के जन्मदिवस के दिन राष्ट्रीय छुट्टी होती है। बटेविया में यह दिन बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। जन्मदिवस के एक दिन पहले ही लोग राजा के मैदान में एकत्रित होते हैं। जन्मदिवस

के दिन प्रत्येक भांति के खेल तमाशे किये जाते हैं। संध्या समय आतश-बाज़ी बड़े समारोह के साथ दिखाई जाती है। उसी दिन सब लोग अजायबघर देखने जाते हैं। अजायब घर बांस का तयार किया जाता है। उसमें चमकता हुआ रोशनी का शेर रहता है। यह शेर डच जाति की प्रतिमा होती है। प्सारग्लाप का त्योहार पुआसा (रमज़ान का अंतिम दिवस) के साथ मनाया जाता है। इस समय एक सप्ताह तक भोज होता है। इस उत्सव में लड़कियां लकड़ी के स्तम्भों पर लटकाई जाती हैं और उनको भली भाँति सजाया जाता है। वे एक बड़े जुलूस में निकाली जाती हैं।

सारे जावा में हार्स रेसिंग (घुड़-दौड़) का खेल प्रचलित है और लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। यह दौड़ लगभग तीन दिन तक रहती है और दूसरे खेल भी इसी अवसर पर संगठित किये जाते हैं। खेती की उपज, जानवरों और देशी बनी हुई वस्तुओं की प्रदर्शनी इसी अवसर पर होती है। इसमें जावा निवासी बड़े चाव से भाग लेते हैं। जोग्जा और बंडूँग में यह उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है। देशी अमीर तथा सरदार भी इसमें मामूली प्रजा के साथ सम्मिलित होते

हैं। बाजा और गाना आदि भी होता है। जावा के राज्य का झंडा चारों ओर फहराता रहता है। विजेता की विजय पर चारों ओर हलचल मच जाती है और बड़ी खुशी मनाई जाती है। सुल्तान का निजी आदमी जब घुड़-दौड़ में सम्मिलित होता है और विजयी होता है तो उसपर देखने वाले फूलों की बर्षा करते हैं और उसे नाच गान करते हुये पंडाल के बाहर ले जाते हैं। जावा निवासी लोग उस समय समस्त देशों के निवासियों का शृङ्गार करके छोटे घोड़े तथा टट्टुओं पर चढ़ कर जुलूस निकालते हैं।

घुड़दौड़ के रिवाज़ के साथ ही साथ जावा में भैंसों की दौड़ भी होने लगी है। भैंसों की दौड़ जब होती है तो भैंसे बड़ी शान के साथ सजाये जाते हैं। दौड़ के समय भैंसों की रखवाली एक छोटा लड़का करता है। बहुधा भैंसों की पीठ पर पक्षी बैठ जाते हैं और वे भैंसों की पीठ को अपनी चोंच से खोदते रहते हैं। इस पक्षी का बैठना बुरा नहीं माना जाता है क्योंकि ऐसा होना जावा निवासियों के लिये आने वाली दुर्घटना की सूचना देना है। जब भैंसों की दौड़ होती है तो प्रत्येक गांव का भैंसा दौड़ के लिये तयार रहता है।

उसकी तयारी तथा दौड़ देखकर मालूम होता है कि वह विजयी होने पर मिलने वाले सत्कार तथा आदर को भली भांति जानता है।

भैंसों का युद्ध भी जावा में बड़े चाव से देखा जाता है। लोग लड़ाने के लिये भैंसे पालते हैं जब कोई भैंसा हार जाता है तो उसे पालने वाला घर से निकाल देता है और वह क़साई के यहाँ मार डालने के लिये भेज दिया जाता है क्योंकि उसने हार मान कर अपने मालिक का निरादर किया है। भैंसे एक दूसरे के साथ भयानक युद्ध करते हैं और अपने साथ लड़ने वाले भैंसे को बिना जान से मारे अथवा बेहोश किये नहीं छोड़ते। भैंसे चीतों और तेंदुओं के साथ भी लड़ाये जाते हैं। तेंदुआ पकड़ कर पिंजड़े में रक्खा जाता है और लड़ाई के समय खोला जाता है। उससे लड़ने के लिये भैंसे छोड़े जाते हैं। यदि भैंसे ने उसे मार डाला तो फिर ठीक है नहीं तो चारों ओर देखने वाले बल्लम भाले लिये खड़े रहते हैं और जब जंगली पशु कोई मार्ग बीच में पाकर अपनी जान बचाने के लिये भागता है तो लोग उसकी हत्या भालों द्वारा कर डालते हैं।

जावा का मध्यवर्ती भाग

जावा के मध्यवर्ती भाग में प्रिंस्पैलटियां (छोटे देशी राज्य) हैं । यह राज्य सुरकर्ता और जोग्जा कर्ता के हैं । इन राज्यों की राजधानी सुरकर्ता और जोग्जा कर्ता अथवा सोलो और जोग्जा हैं । यह राज्य बटेविया और बुइतेन ज़ोर्ग प्रान्तों की देख रेख में हैं । सुरकर्ता के शासक सुनान (जिसे महाराज की उपाधि भी मिली है) और जोग्जा कर्ता के शासक सुल्तान के नाम से प्रसिद्ध हैं । यही दोनों राज्य जावा का हृदय अथवा प्रधान जावा निवासियों के स्थान हैं । इन दोनों राज्यों में मात्रम साम्राज्य के रीति-रिवाज़ अब भी प्रचलित हैं । यह रिवाज केवल मुसलमानी मात्रम के ही नहीं वरन् हिन्दू मात्रम के भी हैं । यह दोनों राज्य डच सरकार के अधिकार में हैं ।

सुरकर्ता राज्य के अधिकार में मंगकू नेगोरो और जोग्जा कार्ता के अधिकार में पाकूअलम नामक छोटे राजे हैं । प्रत्येक राजा को गद्दी पर बैठने पर एक नई संधि डच सरकार के साथ करनी पड़ती है जिसमें राजा अपने अधिकारों को कम करता है और उन पर रोक

लगाता है। प्राचीन मांगत बड़े निर्दयी होते थे। राजों को माँगत कहते हैं। किसी समय में किसी मांगतू ने १०० स्त्रियों को भूकों मार डाला था।

जोग्जा कार्ता से जावा के प्राचीन स्थानों का भ्रमण बड़ी सुगमता के साथ किया जा सकता है। प्राम्बनान का हिन्दू मन्दिर सुरकर्ता के प्रान्त सड़क पर उस स्थान पर है जहां सुरकर्ता और जोग्जा कर्ता के राज्य मिलते हैं। केदू स्थान पर बोरो कुदूर और मेनडूत के सुन्दर मन्दिर बौद्ध काल के बने हैं। इनकी कला बड़ी सुन्दर है। इन मन्दिरों के देखने के लिये ट्राम द्वारा जोग्जा कार्ता से जाया जा सकता है। जावा में बाज़ारों को पासर्स कहते हैं। यह बाज़ार सबेरे लग जाते हैं। गावों में प्रत्येक पांचवें दिन बाजार लगता है। बाज़ार में प्रत्येक ढंग के मनुष्य से भेंट होती है। जोग्जा का बाज़ार किले के समीप एक बड़े मैदान में है। इसमें छायादार दुकानें हैं। दूकानों के सामने दुकानों के नाम के तख्ते लटकते रहते हैं फल, तरकारी, कपड़े खेल के सामान, बर्तन, तम्बाकू, प्याज, घरेलू सामान और दूसरी वस्तुओं की दुकाने बाज़ार में होती हैं।

बाज़ारों में देशी औषधियां भी मिल सकती हैं। यह

औषधियां ताज़ी और सुखाई जड़ों की होती हैं। स्त्रियां औषधियों को मिलाकर भांति भांति के रोगों की दवा द्वार द्वार पर जाकर बेचा करती हैं। जावा में वृद्ध स्त्रियां वैद्यों का काम करती हैं। स्त्री जितनी अधिक वृद्धा होती है उतना ही अधिक उसका मान होता है। जावा निवासी कुनैन को छोड़ कर दूसरी योरुपीय औषधि पर विश्वास नहीं करते हैं इसी कारण वे डाक्टरों की दवा नहीं करते। जड़ी बूटियों पर उनका अधिक विश्वास तथा प्रेम है। डोयन टिडोर-टिडोरन नामक दवा यदि बच्चे के तकिये के नीचे रख दी जाती है तो बच्चा सुख की नींद सोता है। जावा की देशी दवायें योरुपीय डाक्टरों का ध्यान अपनी उपयोगिता के कारण अधिक से अधिक आकर्षित कर रही हैं।

जावा के बाज़ारों में मारने वाले ज़हर खुले बाज़ार बिकते हैं। इन विषों का प्रयोग शिकार करने, मछली मारने, शिकार को मारने आदि में प्रयोग किया जाता है। कभी कभी विष का प्रयोग बैरी को मारने में भी किया जाता है। विष अधिकतर जड़ी बूटियों की पत्तियों के रस को मिलाकर तयार किया जाता है जिसका

मालूम करना कठिन हो जाता है। तांबे और दूसरे खनिज पदार्थों से भी विष तयार किया जाता है। शीशे की बुकनी, बांस के रेशे, पुरुष तथा स्त्री के बाल, जानवर के बाल (खास कर शेर के बाल) से भी विष बनाया जाता है। दवाओं तथा विषों को तयार करने के लिये जावा में दिन नियत होते हैं।

सारोंग, जाकेट और रुमाल को मामूली तौर पर गहरे नीले रंग से रंगा जाता है। चमकीले रंग से जावा के उच्च तथा नीच श्रेणी के लोगों की पहचान होती है। उच्च श्रेणी वाले अधिक चमकीले वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। छातों का प्रयोग जावा में लगभग उच्च श्रेणी के लोग करते हैं परन्तु सुनहरे रंग का छाता केवल सुल्तान और सुनान ही कर सकते हैं। राज्य के उत्तराधिकारी एक के ऊपर दूसरे करके तीन छातों का प्रयोग करते हैं। नीचे श्रेणी के लोगों को छाता लेकर चलना एक प्रकार का अपराध माना जाता है।

जावा में लड़कों का ब्याह १५ या १६ साल में और लड़कियों का ग्यारह या बारह साल की अवस्था में किया जाता है। ब्याह के आरम्भ की रीतियां लड़की

तथा लड़के के माता पिता करते हैं। जब शादी तय हो जाती है तो लड़के को लड़की के देखने की आज्ञा मिल जाती है, परन्तु आम तौर पर वे पहले ही एक दूसरे से मिल चुकते हैं। लड़की और लड़के के भेंट हो जाने के पश्चात् लड़के का पिता लड़की के लिये एक अँगूठी, कुछ कपड़े और मिठाइयाँ भेजता है और फिर कुछ दिनों के बाद रुपया, चावल और बर्तन भोजन बनाने के भेजे जाते हैं। लड़की और लड़के के माता पिता इस अवसर पर धूम धाम से दूल्हन के हाथ का बनाया हुआ भोजन करते हैं और खुशी मनाते हैं। इस अवसर पर एक बड़ा भोज दिया जाता है और कई दिनों तक लगातार चलता रहता है। जब तक उत्सव जारी रहता है वर और कन्या को व्याह संस्कार के समय तक जागते रहना पड़ता है। उनका ऊँघना अथवा सो जाना अशुभ माना जाता है। उन्हें एक दूसरे के बगल में बैठे रहना होता है। वर श्वेत अथवा नीली टोपी लगाता है। वर का सीना और पीठ नीले रंग के लेप से पोत दिया जाता है। फूलों की माला उसके गले तथा कानों से लटकती रहती है। धनवान वर हीरों

और मोती की माला पहिनते हैं। बर के बगल में किरिस लटकती रहती है। कन्या और बर के मुखों पर पाउडर लगाया जाता है। कन्या की आँख की भौहें काले रंग से रंगी जाती हैं। उसके हाथ और कन्धे बोरेह (नीले रंग का लेप) से पोत दिये जाते हैं और उन पर पुष्पों की माला और मोती तथा हीरे के हार लटका दिये जाते हैं। उसकी सारोंग (जो रुमाल उसके सीने को ढंकती है) और रुमाल सुन्दर बेलबूटे दार रेशम की होती है। वह अँगुली में अँगूठी, चूड़े, चूड़ियां, बहुँटिया और गले में हार पहिने रहती है। उसके सिर पर राजा के मुकुट की भांति सिर का ढक्कन रहता है।

कला-कौशल

यद्यपि जावा के लोग सुख पूर्वक रहना चाहते हैं तो भी वे अपने को सुख में बिलकुल लीन नहीं कर देते हैं। वे बड़े किसान होते हैं, कला-कौशल में भी वे बड़े प्रवीण होते यदि डच सरकार उनको प्रोत्साहन देती और उन्हें योरुपीय बाज़ार के लिये जबरदस्ती अन्न उत्पन्न करने में न लगाती। घरेलू रोज़गार प्रोत्साहन न पाने के कारण बहुत खराब हो गये हैं। यद्यपि लकड़ी के काम, सूत के कातने, कारीगरी करने, धात सम्बन्धी वस्तु तयार करने आदि में जावा निवासी अधिक प्रवीण नहीं हो सके तो भी वे लोग किसी कला के करते समय उसके रूप छोटाई बड़ाई का बड़ा ध्यान रखते हैं। रेखा और रंग का भी वे बड़ा ध्यान रखते हैं और किसी प्रकार की त्रुटि उसमें नहीं होने पाती है।

केदीरी प्रान्त के कुछ ज़िलों में मिट्टी के बर्तन बड़े सुन्दर बनाये जाते हैं। यह बहुत हल्के सुन्दर और दृढ़ होते हैं। पेसन्ट्रेन में मिट्टी के गमले, ट्रेंगालेक में छेददार मिट्टी के बर्तन बनते हैं जिनमें पानी बहुत ठंडा रहता है। यह बर्तन समस्त जावा में प्रयोग किये जाते हैं।

बटिकिंग, कपड़े पर मोम द्वारा फूल-पत्तियों को काढ़ कर कपड़े को रंगने को कहते हैं। मोम द्वारा बेलबूटे कढ़ा हुआ कपड़ा जब रंगा जाता है तो मोम के स्थान श्वेत रह जाते हैं उन्हें चतुरता से इसी प्रकार दूसरे रंगों से रंग दिया जाता है। इनमें कुछ रूप ऐसे बनाये जाते हैं

चमड़े पर बेलबूटे तथा चित्रकारी करना।

जिनका बड़ा आदर किया जाता है। इस कार्य को प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता, इसे ठीक रूप में करने के लिये विशेष, धैर्य, चतुर्ता और कला की आवश्यकता पड़ती है। यह काम पेकलोंगन जोग्जा में बड़ा सुन्दर होता है। ऐसे रंगे जाने वाले कपड़ों की कताई बुनाई

भी एक अनेक ढंक पर की जाती है। जावा में विदेश से भी अधिक कपड़ा मँगाया जाता है। ताना का काम घरों में बहुत होता है जिससे जावा में देशी कपड़ा भी काफी तयार होता है। जावा निवासियों का विश्वास है कि कताई और बुनाई से जो शब्द होता है उससे चुड़ैल, भूत, पिशाच आदि दूर भाग जाते हैं। सारोंग जावा में ही तयार किया जाता है। वह किसी थान से काट कर नहीं तयार किया जा सकता है क्योंकि उसे एक समूचे कपड़े के टुकड़े पर होना चाहिये, सारोंग के अन्दर कपाल और बदन (शरीर) का होना आवश्यक है। ऊपर और नीचे सारोंग में ढिग (किनारा) का होना ज़रूरी है। इसका कपाल आयताकार अथवा गुम्बदाकार होता है। प्रत्येक व्यक्ति सारोंग को ठीक रूप में नहीं पहन सकता। इसकी पतें ठीक मोड़ी जाती हैं। ढिग ऊपर दिखलाई पड़ती है। और कपाल पीठ की ओर कुछ दाहिनी ओर रहता है। यह कमर में बांधा जाता है।

जावा में टोकरी, चटाई और मोम का काम भी खूब होता है। केदू, बगेलेन, सिंगपर्न आदि स्थानों में

बांस की टोकरियां, चटाइयां और दूसरे घरेलू सामान बनाये जाते हैं। जपारा में लकड़ी का काम अच्छा होता

कपड़े पर छपाई का काम।

है। किरिस के रखने के लिये मियान लकड़ी और हाथी दांत के बहुत सुन्दर बनाये जाते हैं। बढ़ई, लोहार,

सोनार लोग सोने, चांदी, तांबे, लोहे और पीतल के सुन्दर सामान तयार करते हैं। लड़के के लिये लोहे के हथियार बनाये जाते हैं। जावा में सैकड़ों प्रकार की किरिस बनाई जाती है। सीधी, वृत्ताकार और सांप के आकार की किरिस अधिक बनाई जाती हैं क्योंकि इन्हें जावा निवासी अधिक पसंद करते हैं। स्त्रियाँ छोटी किरिस अथवा पटरेन का प्रयोग करती हैं।

जावा के लोग दूसरे देशों में कम जाते हैं। वे सेना में अवश्य अधिक भरती होते हैं। जावा निवासी बड़े लड़ाकू होते हैं। वहाँ योधा लोग बल्लम लेकर मैदान में घोड़ी पर चढ़ कर टोर्नामेन्ट में लड़ते हैं जो बीर अपने विरोधी को घोड़े की काठी से उठने पर मज़बूर कर देता है उसी की विजय मानी जाती है परन्तु ऐसे खेलों की आज्ञा रकार बहुत कम देती है क्योंकि इस प्रकार के खेलों में अधिक चोट खाने और मृत्यु हो जाने की सम्भावना रहती है।

जावा के नगर

बटेविया—यह जावा की राजधानी है। यहाँ की जनसंख्या २,६०,४०८ है।

बटेविया से दक्षिण की ओर एक रेलवे लाइन पेक लोगन और समरंग रेज़ीडेन्सियों में होकर जाती है। यह लाइन केदू और बन्यूमस होकर जोग्जा कार्ता पहुँचती है।

डेयोक एक धर्म प्रचारक बस्ती है।

तंजेरंग बंटम के समीप है। इस नगर की जनसंख्या ११०६१ है और सदन नदी पर बसा है।

सेरंग नगर बंटम की राजधानी है। यह नगर सूंडा जलसंयोजक पर स्थित है और यहां की जनसंख्या बाइस हज़ार है।

क्रावंग में रेज़ीडेन्सी है और जनसंख्या १२ हज़ार है। यह नगर चावल का केन्द्र है।

पुरवा कर्ता नगर की जनसंख्या ११ हज़ार है। यहाँ पर असिस्टेन्ट रेज़ीडेन्ट रहता है।

बंदूंग प्रीऐंगर की राजधानी है और पहाड़ियों के बीच में बसा है। यहां की जनसंख्या एक लाख एकहत्तर हज़ार है।

देश दर्शन

सुकाबूमी नगर समुद्रतल से २३०० फुट ऊँचे स्थान पर स्थित है। यहाँ की जनसंख्या ४२ हज़ार है। यह असिस्टेन्ट रेज़ीडेन्ट के रहने का स्थान है। यह नगर विज्न कूप की खाड़ी पर है और वायु सेवन का प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर चीबुरुम का प्रपात ४२६ फुट ऊँचा है।

तासिक मलय की जनसंख्या २० हज़ार है। यहां पर सड़क का स्टेशन और होटल है। यहाँ दक्षिणी प्रीऐंगर का असिस्टेन्ट रेज़ीडेन्ट रहता है। इस नगर में चटाई और मोम का सामान बनाया जाता है।

वञ्जर एक प्रसिद्ध रबर का केन्द्र है।

चेरी बोन नगर की जनसंख्या लगभग ३२ हज़ार है। यहां पर रेज़ीडेन्ट रहता है। इससे २३ मील भीतर की ओर कुनिंगन का पर्वतीय वायुसेवन करने का स्थान है। यह लिंग जाति के स्नान करने का प्रसिद्ध केन्द्र है।

इन्द्रमायु नगर नदी पर है। यह अपनी रेज़ीडेन्सी की राजधानी है। यहां की जनसंख्या १८ हज़ार है। इस नगर में चावल का व्यापार होता है।

लेगाल की जनसंख्या ३३,१४३ है। इस नगर में चीनी का व्यापार होता है।

पेक लोंगन नगर की जनसंख्या ६१ हज़ार है। यह चीनी की निर्यात के लिये प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहाँ पर बेलबूटों के बनाने और कपड़े पर छपाई का सुन्दर काम होता है।

केंडाल नगर समरंग से १८ मील पश्चिम है, जन संख्या १२,३२४ है। यहाँ एक प्राचीन क़िला और प्रोटेस्टेन्ट चर्च है।

जोग्जाकार्ता की जनसंख्या एक लाख दस हज़ार है।

मओस नगर से ओनोसोबो (डींग पठार की राज-धानी) तक ट्रामगाड़ी चलती है।

मेंगलंग नगर समुद्रतल से १२४६ फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह केदू की राजधानी है। यहाँ से सैनिक केन्द्र परकन तक ट्राम चलती है।

मुन्तिलन में अधिकतर चीनी बस्ती है और प्रसिद्ध बाज़ार है।

क्राकल स्थान पर पानी के गरम सोते हैं जिनमें नहाने से रोग अच्छे हो जाते हैं।

क्रेतेग स्नान करने का प्रसिद्ध स्थान है। यहां से रेलवे लाइन सुराकार्ता को जाती है।

सुराकार्ता की जनसंख्या १५,२७३ है।

मदियुन नगर रेलवे तथा कृषि का केन्द्र है। यहां पर रेज़ीडेन्ट रहता है। इस नगर की जनसंख्या ३२ हज़ार है।

पोनो रोगो मदियुन से ३० मील दक्षिण ट्रामवे की सड़क पर बसा है। जनसंख्या लगभग १६ हज़ार है।

केदीरी नगर की जनसंख्या ३२ हज़ार है। यह चीनी के बाज़ार का केन्द्र है।

सुरबाया नगर जावा का प्रधान व्यापारिक बन्दरगाह है। यहां की जनसंख्या २५ हज़ार है। यह नगर समुद्री सेना का एक प्रधान अड्डा है। इसी नगर के समीप चीनी तयार करने के कारखाने और प्राचीन मजपहित साम्राज्य के खंडहर हैं।

अम्बरवा नगर सुरबाया-समरंग ब्राञ्च लाइन पर स्थित है। इस नगर की जनसंख्या १५ हज़ार है। यह समुद्र तल से १७०० फुट ऊँचे स्थान पर स्थित है।

यह पहले सैनिक केन्द्र था। अब भी यहाँ पर एक क़िला बना हुआ है।

सलतिगा नगर समुद्र तल से १६०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यह स्वास्थ्य सुधारने के लिये उपयुक्त स्थान है। यहाँ पर चाय के बीज की जांच के लिये स्टेशन है। इस नगर की जनसंख्या २० हज़ार है।

मेरबाबू नगर ४ हज़ार फुट की ऊँचाई पर है और हवा खाने का सुन्दर स्थान है।

देमाक समरंग से उत्तर-पूर्व है। यहाँ पर फल को उपज हाती है। यह सिंचाई का केन्द्र है। यहां पर पन्द्रहवीं सदी का रोदन पतेह का बनवाया हुआ एक बड़ा मन्दिर है। इस मन्दिर के स्तम्भों को किसी देवता ने बनाया था। यह एक पवित्र तीर्थ स्थान है।

कुदुस की जनसंख्या ४५ हज़ार है। यहां पर कपड़े, छपाईदार कपड़े, कपोक, कोपरा और पशुओं का व्यापार होता है। जपारा, मतरम का प्रधान बन्दरगाह है। यह डच लोगों को प्राचीन स्टेशन था।

रेम्बांग नगर तथा बन्दरगाह है। जनसंख्या १३ हज़ार है।

ब्लोरा नगर की जनसंख्या १५ हज़ार है।

चेपू मिट्टी के तेल का केन्द्र है।

ग्रिस्सू नगर की जनसंख्या २४,५०० है। यहाँ पर डच लोगों ने १६०२ ई० में प्रथम कारखाना खोला था। यह नगर सुरबाया के मार्ग में पड़ता है।

पसुरुश्रान ग्रिस्सू के पूर्व में है। इसकी जनसंख्या ३३ हज़ार है। यह रेज़ीडेन्सी की राजधानी और बन्दरगाह है। यहां पर चीनी का व्यापार होता है। इस नगर से पहाड़ी स्थानों को रेलवे लाइनें जाती हैं।

लवांग की जनसंख्या १२ हज़ार है।

मलांग की जनसंख्या ५६,२७३ है। यह नगर १४६० फुट की ऊँचाई पर है। यह एक सैनिक स्थान है और स्वास्थ्य सुधारने का मुख्य स्थान है। इसके समीप देखने योग्य दृश्य तथा प्राचीन खंडहर हैं।

तोसारी नगर तेनगेर की राजधानी है और हवा खाने का मुख्य स्थान है।

प्रवोलिंगो की जनसंख्या २० हज़ार है। यहाँ से काली सात को रेलवे जाती है।

जेम्बर नगर में रेलवे स्टेशन तथा तम्बाकू का केन्द्र है।

बोंडोश्रोसो की जनसंख्या १४ हज़ार है। यहां पर बेसुकी रेज़ीडेन्सी की राजधानी है।

बन्यु वाँगी पूर्व की ओर है। इस नगर की जन-संख्या १६ हज़ार है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध कैबुल (तार) स्टेशन है। यहां पर आस्ट्रेलिया के जहाज रुकते हैं। डच लोग इस नगर में १७७४ ई० में अँग्रेज़ों तथा बालीनीस को बाली जलडमरूमध्य पर अधिकार करने से रोकने के लिये आये थे।
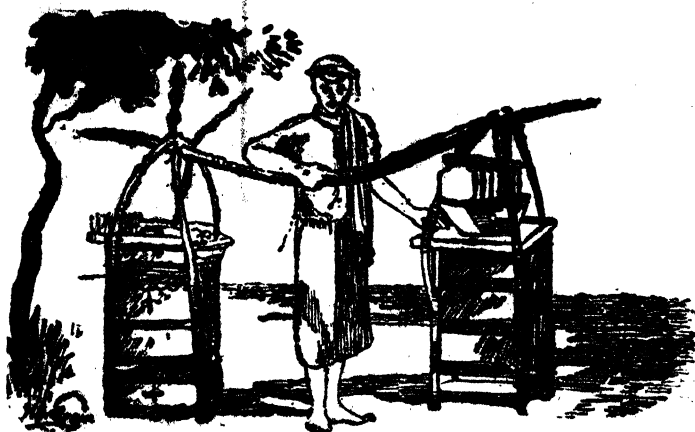
शराब बेचने वाला अपने सामान सहित।

जावा के आने जाने के साधन

प्रीएँगर, डोंग, मलांग, टेनगेर पगरों और मैदानों में सुन्दर सड़कें हैं। परन्तु कहीं कहीं तटों पर सड़क का बनाना कठिन हो गया है। पहाड़ी श्रेणी जो मध्यवर्ती
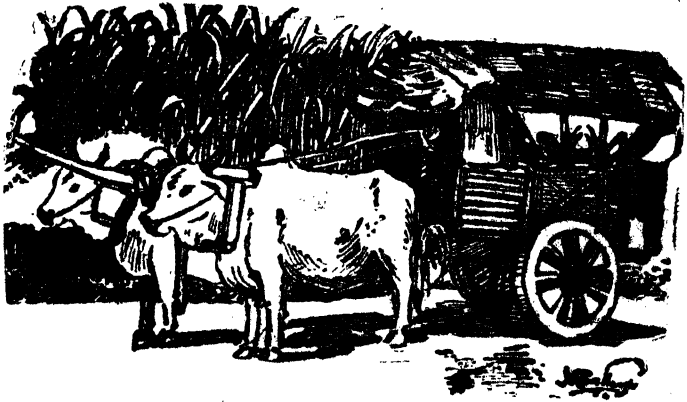
बैलगाड़ी।

भाग की घाटियों को मिलाती है उसके साथ साथ सड़कें पश्चिम से पूर्व को जाती हैं। सरकारी सड़कों की लम्बाई १७६३ मील है। निजी सड़कों की लम्बाई १५५० मील है। एक सड़क पर बिजली लगी हुई है।

भाप से चलने वाली बहुत सी ट्रामवे लाइनें हैं। सड़कों पर बसों का प्रयोग होता है। बन्दूंग में सरकारी रेलवे का केन्द्र है। डच पूर्वी द्वीप समूह के हवाई शक्ति में तटीय स्टीमर एक प्रधान काम करते हैं। जावा में टेलीफोन और टेलीग्राफ की बड़ी उन्नत्ति हुई है। टेलीग्राफ के तार की समस्त लम्बाई १,०६,००० मील है। बन्दूंग संसार के प्रधान बेतार के तारों का एक स्टेशन गिना जाता है। जावा में बैलगाड़ी का प्रयोग सवारी के लिये बहुत किया जाता है।

चिड़ियों को फंसाने वाले।

जावा का शासन

पश्चिमी जावा में ६ रेज़ीडेन्सियां हैं शेष जावा १३ रेज़ीडेन्सियों में बँटा है। रेज़ीडेन्टों के नीचे सहायक रेज़ीडेन्ट और कन्ट्रोलर्स नामक अफसर रहते हैं। प्रत्येक ज़िले का एक अफसर होता है। कन्ट्रोलर लोग गांवों के शासन का कार्य करते हैं। यह कलेक्टर के ऊपर रहते हैं। प्रत्येक गाँव का एक मुखिया होता है। कन्ट्रोलर के अधिकार बहुत कम होते हैं। वह केवल सहायक मात्र ही होता है। पश्चिमी जावा का गवर्नर और बारकस का रेज़ीडेन्ट पूर्वी डच द्वीप के गवर्नर जनरल के अधिकार में रहते हैं। इसके सिवा रेजिडेन्सियां होती हैं। इनके शासक देशी सरदार होते हैं जो रीजेन्ट कहलाते हैं। यह लोग डच सरकार को राजनैतिक सम्बन्धी राय देते और लेते हैं। यह भारतीय छोटे राजाओं की भाँति हैं। इन लोगों के अधिकार अभी हाल ही में कुछ बढ़ाये गये हैं। सोलो (सुरकर्ता) और जोग्जा कार्ता के सुल्तान (राजा) रेज़ीडेन्ट की सलाह से राज्य करते हैं। उन्हें अधिक कर लेने तथा अधिक संस्कारों के

करने का अधिकार प्राप्त है। गवर्नर जनरल डच सरकार की सहायता के लिये चीनी तथा अरब सलाहकारों की नियुक्ति डच करता है।

योरुप की वर्तमान लड़ाई ने जावा की स्थिति बड़ी नाजुक बना दी है। जब तक हालैंड स्वाधीन था तब तक तो जावा में उसी तरह का शासन था जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है। लेकिन हालैंड पर जर्मनी का हमला हुआ और एक ही सप्ताह के भीतर जर्मन फौजों ने हालैंड पर अधिकार कर लिया। अब प्रश्न यह है कि जावा पर किसका अधिकार हो। हालैंड की सरकार ने हराने के पहले अपने सब अधिकार वहां के गवर्नर को सौंप दिये थे। इनके अनुसार वहां का दैनिक शासन कुछ कुछ शान्ति पूर्वक चल रहा है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की इच्छा है कि पूर्वी द्वीप समूहों की राजनैतिक स्थिति में किसी तरह का अन्तर न पड़े। जापान के लिये जावा और उसके पड़ोस की रबर, शक्कर, टीन, मसाले और मिट्टी का तेल बड़े काम का है। इसलिये जापान की आंखें इस ओर लगी हैं। जब तक वह चीन में फँसा है तब तक चाहे वह इधर तेज़ी से न बढ़े। उधर से मुक्त होते ही वह इधर बढ़ने का

प्रयत्न करेगा। इससे जर्मनी को यह लाभ होगा कि अमरीका को कुछ शक्ति इधर लगानी पड़ेगी और वह पूरे ज़ोर से ब्रिटेन की सहायता न कर सकेगा।

इधर जापान ने फ्रांसीसी इण्डोचीन पर एक प्रकार से अपना प्रभुत्व जमा लिया है। आगे वह किधर बढ़ेगा यह कहना कठिन है। लेकिन जावा की वर्तमान स्थिति संकटों से भरी हुई है।